अथ कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

अर्जुन उवाच ।

ज्यायसी चेत् कर्मणः ते मता बुद्धिः जनार्दन ।

तत् किम् कर्मणि घोरे माम् नियोजयसि केशव ॥ ३ - १॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjun	Arjun	अर्जुन (ने)	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाला
ज्यायसी	Jyaayasee	superior	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
चेत्	Chet	if	यदि	जर
कर्मणः	KarmanaH	than action	कर्म की अपेक्षा	कर्माहून
ते	Te	by you	आप को	तुझ्या
मता	Mataa	thought	मान्य है	मताप्रमाणे
बुद्धिः	BuddhiH	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
जनार्दन	Janaardana	O Krishna !	हे जनार्दन !	हे श्रीकृष्णा !
तत्	Tat	then	तो फिर	तर मग
किम्	Kim	why	क्यों	का बरे
कर्मणि	KarmaNi	in action	कर्म में	कर्मामध्ये
घोरे	Ghore	terrible	भयंकर	भयंकर
माम्	Maam	me	मुझे	मला
नियोजयसि	Niyojayasi	you engage / enjoin	लगाते हैं	प्रवृत्त करीत आहेस ?
केशव	Keshava	O Keshava !	हे केशव !	हे श्रीकृष्णा !

अन्वय :-

हे जनार्दन ! कर्मणः बुद्धिः ज्यायसी ते मता चेत् , तत् हे केशव ! माम् घोरे कर्मणि किम् नियोजयसि ? ॥ ३ - १ ॥

English translation:-

Arjun said, "O Janardana ! If it is considered by you that knowledge is superior to action, then why do you, O Keshava, enjoin me in such a terrible action?"

हिन्दी अनुवाद :-

हे जनार्दन ! यदि आप कर्म की अपेक्षा ज्ञान को श्रेष्ठ मानते है , तो फिर हे केशव ! आप मुझे इस भयंकर कर्म में क्यों लगा रहे हैं ?

मराठी भाषान्तर :-

हे श्रीकृष्णा ! कर्माहून ज्ञान श्रेष्ठ आहे असे तुझे मत असेल तर मग हे केशवा , तू मला या भयंकर युद्धकर्मास का बरे प्रवृत्त करीत आहेस ?

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला ,

बुद्धि कर्माहुनी थोर मानिसी तूं जनार्दना
मग कर्मांत कां घोर घालिसी मज केशवा ॥ ३ – १ ॥

व्यामिश्रेण इव वाक्येन बुद्धिम् मोहयसि इव मे ।

तत् एकम् वद निश्चित्य येन श्रेयः अहम् आप्नुयाम् ॥ ३ – २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
व्यामिश्रेण	VyaamishreNa	perplexing	मिश्रित (कुछ उलझे हुए)	परस्पर विरुद्ध घोटाळयात टाकणाऱ्या
इव	Eva	as it were	से	जणु
वाक्येन	Vaakyen	with speech	वचनों	वाक्यांनी
बुद्धिम्	Buddhim	understanding	बुद्धि को	बुद्धीला
मोहयसि	Mohayasi	confused	मानो मोहित कर रहे हैं	भ्रमात पाडीत आहेस
इव	Eva	as it were	जैसे	जणु
मे	Me	me	मेरी	माझ्या
तत्	Tat	that	उस	तरी (अशी)
एकम्	Ekam	one	एक (बात को)	एकच (गोष्ट)
वद	Vada	tell	कहिये	सांग
निश्चित्य	Nishchitya	for certain	निश्चित कर	खात्रीने
येन	Yen	by which	जिस से	ज्याने
श्रेयः	ShreyaH	bliss	कल्याण को	कल्याण
अहम्	Aham	I	मैं	मी
आप्नुयाम्	Aapnuyam	may attain	प्राप्त हो जाऊँ	प्राप्त करेन

अन्वय :-

व्यामिश्रेण इव वाक्येन मे बुद्धिम् मोहयसि इव । तत् निश्चित्य एकम् वद, येन अहम् श्रेयः आप्नुयाम् ॥ ३ – २ ॥

English translation:-

Arjun said, “With these perplexing words, you are, as it were, confusing my comprehension. Tell me with certainty the path by pursuing which, I may get the Supreme”

हिन्दी अनुवाद :-

मिश्रित वचनों से आप मेरी बुद्धि को मानो मोहित कर रहे है, इसलिये एक ही बात को निश्चित करके कहिये, जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ।

मराठी भाषान्तर :-

परस्पर विरुद्ध, घोटाळयात टाकणाऱ्या वाक्यांनी, जणु तू माझ्या बुद्धीला भ्रमात पाडीत आहेस. म्हणून ज्याने मी कल्याण प्राप्त करुन घेईन अशी एकच गोष्ट निश्चित करुन तू मला सांग.

विनोबांची गीताई :-

मिश्र बोलूनि बुद्धीस जणूं मोहांत टाकिसी
ज्यानें मी श्रेय पावेन सांग तें एक निश्चित ॥ ३ – २ ॥

श्री भगवान उवाच ।

लोके अस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मया अनघ ।

ज्ञानयोगेन सांख्यानाम् कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ ३ – ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रीभगवान उवाच	Shree Bhagavaana Uvaacha	Shri Bhagavan said	श्री भगवान् ने कहा	श्री भगवान म्हणाले
लोके	Loke	in World	लोक में	जगात
अस्मिन्	Asmin	this	इस	या
द्विविधा	Dvividhaa	two-fold	दो प्रकार की	दोन प्रकारच्या
निष्ठा	Nishthaa	path	निष्ठा (मार्ग)	निष्ठा (मार्ग)
पुरा	Puraa	previously	पहले	पूर्वी
प्रोक्ता	Proktaa	said	कही गयी है (उनमें से)	सांगितल्या आहेत
मया	Mayaa	by me	मेरे द्वारा	मी
अनघ	Anagha	O sinless one!	हे निष्पाप अर्जुन !	हे निष्पाप अर्जुना !
ज्ञानयोगेन	Dnyana-yogena	by the path of knowledge	ज्ञानयोग से	ज्ञानयोगाने
सांख्यानाम्	Saan-khyaanam	of the Samkhyas	साङ्ख्ययोगियों की	कर्तेपणाचा अभिमान सोडून कर्मे करणाऱ्यांची
कर्मयोगेन	Karmayogena	by the path of action	कर्मयोग से	कर्मयोगाने
योगिनाम्	Yoginaam	of the yogis	योगियों की	योग्यांची

अन्वय :- हे अनघ ! अस्मिन् लोके सांख्यानाम् ज्ञानयोगेन , योगिनाम् कर्मयोगेन द्विविधा निष्ठा पुरा मया प्रोक्ता ॥ ३ – ३ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "O sinless one, the twofold path was told by Me, to the world in the beginning - the path of knowledge to the discerning and the path of work to the active."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा , " हे निष्पाप अर्जुन ! इस लोक में दो प्रकार की निष्ठा (तथा मार्ग) मेरे द्वारा पहले कही गयी है । जिन की रुचि ज्ञान में होती है , उन की निष्ठा ज्ञानयोग में और कर्म में रुचिवालों की निष्ठा , कर्मयोग में होती है ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " हे निष्पाप अर्जुना ! या जगात दोन प्रकारच्या निष्ठा मी पूर्वी सांगितल्या आहेत. सांख्यांची (कर्तेपणाचा अभिमान सोडून कर्मे करणाऱ्यांची) निष्ठा ज्ञानयोगावर आणि योग्यांची निष्ठा निष्काम कर्मयोगावर असते ."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले ,

दुहेरी ह्या जगीं निष्ठा पुर्वी मी बोलिलों असें
ज्ञानानें सांख्य जी पावे योगी कर्म करुनियां ॥ ३ – ३ ॥

न कर्मणाम् अनारम्भात् नैष्कर्म्यम् पुरुषः अश्नुते ।

न च संन्यसनात् एव सिद्धिम् समधिगच्छति ॥ ३ – ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	न तो	नाही
कर्मणाम्	KarmaNaam	of actions	कर्मों का	कर्मांचा
अनारम्भात्	Anaarambhaat	From non-performance	आरंभ किये बिना	आरंभ न केल्याने
नैष्कर्म्यम्	NaiSh-karmyam	Action-less	निष्कामता को	कर्मबंधनातून सुटका
पुरुषः	PuruShaH	man	मनुष्य	मनुष्य
अश्नुते	Ashnute	reaches	प्राप्त होता है	प्राप्त होते / मिळते
न	Na	not	न	नाही
च	Cha	and	और	तसेच
संन्यसनात्	Sannyasanaat	from renunciation	कर्मों के त्यागमात्र से	कर्मांचा त्याग केल्याने
एव	Eva	only	केवल	केवळ
सिद्धिम्	Siddhim	perfection	सिद्धि यानी सांख्यनिष्ठा को ही	आत्मसिद्धी
समधिगच्छति	Samadhi-Gachchhati	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करुन घेतो

अन्वय :-

कर्मणाम् अनारम्भात् पुरुषः नैष्कर्म्यम् न अश्नुते । (कर्मणाम्) च संन्यसनात् एव सिद्धिम् न समधिगच्छति ॥ ३ – ४ ॥

English translation: -

Man neither gains action-less-ness by abstaining from activity, nor does he rise to perfection by mere renunciation of action.

हिन्दी अनुवाद :-

मनुष्य न तो कर्मों का आरम्भ किये बिना निष्कर्मता को अर्थात् योगनिष्ठा को प्राप्त होता है और न कर्मों के केवल त्यागमात्र से सिद्धि अर्थात् सांख्यनिष्ठा को ही प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

कर्मांचा आरंभ न केल्याने मनुष्याला निष्कामता (कर्मबंधनातून सुटका) प्राप्त होत नाही तसेच केवळ कर्मांचा त्याग केल्याने तो आत्मसिद्धी प्राप्त करुन घेतो असेही नाही .

विनोबांची गीताई :-

न कर्मारंभ टाळूनि लाभे नैष्कर्म तें कधीं
संन्यासाच्या क्रियेनें चि कोणी सिद्धि न मेळवी ॥ ३ – ४ ॥

न हि कश्चित् क्षणम् अपि जातु तिष्ठति अकर्मकृत् ।

कार्यते हि अवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैः गुणैः ॥ ३ – ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
हि	Hi	for	क्योंकि	कारण
कश्चित्	Kashchit	anyone	कोई भी मनुष्य	कोणीही
क्षणम्	Kshanam	a moment	क्षणमात्र	एक क्षणभर
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
जातु	Jaatu	verily	किसी भी काल में	केव्हाही
तिष्ठति	Tishthati	remains	रहता	राहतो
अकर्मकृत्	Akarmakrut	without performing action	बिना कर्म किये	कर्म न करता
कार्यते	Kaaryate	is made	बाध्य किया जाता है	करण्यास भाग पाडला जातो
हि	Hi	for	निःसंदेह	निःसंदेहपणे
अवशः	AvashaH	helpless	परवश	पराधीन
कर्म	Karma	action	कर्म (करने)	कार्य
सर्वः	SarvaH	all	सारा मनुष्य समुदाय	सर्व जीव
प्रकृतिजैः	PrakrutijaiH	born of nature	प्रकृती से उत्पन्न	प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेल्या
गुणैः	GuNaiH	by the qualities	गुणों द्वारा	गुणांनी

अन्वय :-

कश्चित् जातु क्षणम् अपि अकर्मकृत् न हि तिष्ठति। प्रकृतिजैः गुणैः सर्वः हि अवशः कर्म कार्यते ॥ ३ – ५ ॥

English translation:-

None can ever remain really inactive even for a moment; for everyone is helplessly driven to action by the qualities such as Satva, Raja and Tama which are born out of Nature (Prakriti).

हिन्दी अनुवाद :-

निःसन्देह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र के लिये भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि सारा मनुष्य समुदाय प्रकृतिजनित गुणों द्वारा विवश हुआ कर्म करनेके लिये बाध्य होता हैं।

मराठी भाषान्तर :-

कोणताही प्राणी काहीतरी कर्म केल्यावाचून एक क्षणभरही स्वस्थ राहू शकत नाही ; कारण सर्व जीव प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेल्या सत्त्व, रज आणि तम या गुणांनी अगतिक आणि पराधीन होऊन कर्म करीत असतात.

विनोबांची गीताई :-

कर्माविण कधीं कोणी न राहे क्षण - मात्र हि
प्रकृतीच्या गुणीं सारे बांधिले करितात चि ॥ ३ – ५ ॥

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य यः आस्ते मनसा स्मरन् ।

इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः सः उच्यते ॥ ३ – ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्मेन्द्रियाणि	Karmedriyaani	organs of nature	समस्त इन्द्रियों को हठपूर्वक ऊपर से	सर्व कर्मेन्द्रियांना
संयम्य	Sanyamya	having restrained	रोककर	हट्टाने संयमित करुन
यः	YaH	who	जो	जो
आस्ते	Aaste	sits	रहता है	(करीत) बसतो
मनसा	Manasaa	by the mind	मन से उन	मनाने
स्मरन्	Smaran	remembering	चिन्तन करता	चिंतन करीत
इन्द्रियार्थान्	Indriyaarthaan	sense objects	इन्द्रियों के विषयों का	त्या इंद्रियांच्या विषयांचे
विमूढात्मा	Vimudha-Aatmaa	of deluded understanding	मूढबुद्धि मनुष्य	मूर्ख पुरुष
मिथ्याचारः	MithyaachaaraH	hypocrite	मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी	दांभिक अथवा ढोंगी
सः	SaH	he	वह	तो
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :-

यः कर्मेन्द्रियाणि संयम्य , मनसा इन्द्रियार्थान् स्मरन् आस्ते , सः विमूढात्मा मिथ्याचारः उच्यते ॥ ३ – ६ ॥

English translation:-

That deluded man is called a hypocrite who sits controlling the organs of action, but mentally indulging in the sense objects.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मूढमति पुरुष समस्त इन्द्रियों को पाखण्डमन्तव्य हेतु ऊपर से रोककर , मन से उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन करता रहता है , उसे मिथ्याचारी कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो मूढबुद्धीचा - मूर्खपुरुष सर्व कर्मेन्द्रियांना हट्टाने संयमित करुन , मनाने मात्र त्या इंद्रियांच्या विषयांचे चिंतन करीत बसतो , तो दांभिक म्हणजेच ढोंगी म्हटला जातो.

विनोबांची गीताई :-

इंद्रियें करिती कर्म मूढ त्यांस चि रोधुनी
राहतो भोग चिंतूनि तो मिथ्याचार बोलिला ॥ ३ – ६ ॥

यः तु इन्द्रियाणि मनसा नियम्य आरभते अर्जुन ।

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगम् असक्तः सः विशिष्यते ॥ ३ – ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	who	जो पुरुष	जो पुरुष
तु	Tu	but	किंतु	परंतु
इन्द्रियाणि	IndriyaaNi	the senses	इन्द्रियों को	इंद्रियांना
मनसा	Manasaa	by the mind	मन से	मनाने
नियम्य	Niyamya	controlling	वश में कर	वश करुन घेऊन
आरभते	Aarabhate	commences	आचरण करता है	आचरण करतो
अर्जुन	Arjun	O Arjun!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
कर्मेन्द्रियैः	KarmendriyaiH	by the organs of action	समस्त इन्द्रियों द्वारा	सर्व इंद्रियांच्या द्वारा
कर्मयोगम्	Karmayogam	Karma Yoga	कर्मयोग का	कर्मयोगाचे
असक्तः	AsaktaH	unattached	अनासक्त हुआ	अनासक्त (होऊन)
सः	SaH	He	वही	तो (पुरुष)
विशिष्यते	VishiShyate	excels	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ होय

अन्वय :-

हे अर्जुन! यः तु मनसा इन्द्रियाणि नियम्य, असक्तः कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगम् आरभते , सः विशिष्यते ॥ ३ – ७ ॥

English translation:-

But he excels, O Arjuna, who, restraining the senses by the mind; and being unattached, engages his organs of action to the path of work i.e. Yoga.

हिन्दी अनुवाद :-

किंतु हे अर्जुन! जो पुरुष मन से इन्द्रियों को वश में कर अनासक्त हुआ समस्त इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आचरण करता है, वही उत्तम है।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु हे अर्जुना! जो पुरुष मनाने इंद्रियांचे नियमन करून, अनासक्त होऊन कर्मेंद्रियांनी कर्मयोगाचे आचरण करतो तो श्रेष्ठ होय.

विनोबांची गीताई :-

ज़ो इंद्रियें मनानें तीं नेमुनी त्यांस राबवी
कर्म योगांत निःसंग तो विशेष चि मानिला ॥ ३ – ७ ॥

नियतम् कुरु कर्म त्वम् कर्म ज्यायः हि अकर्मणः ।

शरीरयात्रा अपि च ते न प्रसिध्द् - येत् अकर्मणः ॥ ३ – ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
नियतम्	Niyatam	bounden / obligatory	शास्त्रविहित	शास्त्राप्रमाणे
कुरु	Kuru	perform	करो	कर
कर्म	Karma	action	कर्तव्यकर्म	कर्तव्यकर्म
त्वम्	Tvam	you	तुम	तू
कर्म	Karma	action	कर्म (करना)	कर्म
ज्यायः	JyaayaH	superior	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ आहे
हि	Hi	for	क्योंकि	कारण
अकर्मणः	AkarmaNaH	than inaction	कर्म न करने की अपेक्षा	कर्म न करण्यापेक्षा
शरीर-यात्रा	Shareer-Yaatraa	maintenance of body	शरीर निर्वाह	शरीर निर्वाह
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
च	Cha	and	तथा	आणि
ते	Te	your	तेरा	तुझा
न	Na	not	नहीं	नाही
प्रसिध्द् - येत्	Prasiddhyet	would be possible	सिद्ध होगा	सिद्ध होणार
अकर्मणः	AkarmaNaH	by inaction	कर्म न करने से	कर्म न केल्याने

अन्वय :-

त्वम् नियतम् कर्म कुरु, अकर्मणः हि कर्म ज्यायः। ते शरीर-यात्रा च अपि अकर्मणः न प्रसिध्द् - येत् ॥ ३ – ८ ॥

English translation:-

Engage yourself in obligatory work; for action is superior to inaction, and if you become inactive, even the mere maintenance of your body, would not be possible.

हिन्दी अनुवाद :-

तुम शास्त्रविहित कर्तव्यकर्म करो, क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है; तथा कर्म न करने से तुम्हारा शरीर निर्वाह भी संभव नहीं।

मराठी भाषान्तर :-

तू शास्त्रविहित स्वधर्मरुप कर्म कर. कारण कोणतेही कर्म न करण्यापेक्षा कर्म करणे हे निश्चितच श्रेष्ठ आहे. तू काहीच कर्म केले नाहीस तर तुझा शरीरनिर्वाह सुद्धा चालणार नाही.

विनोबांची गीताई :-

नेमिलें तूं करीं करणें हें चि थोर कीं
तुझी शरीर - यात्रा हि कर्मांविण घडे चि ना ॥ ३ – ८ ॥

यज्ञार्थात् कर्मणः अन्यत्र लोकः अयम् कर्मबन्धनः ।

तदर्थम् कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ३ – ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यज्ञार्थात्	Yadnaa-rthaat	for the sake of sacrifice	यज्ञ के निमित्त किये जानेवाले	यज्ञाच्या निमित्ताने (केल्या जाणाऱ्या)
कर्मणः	KarmaNaH	of actions	कर्मों से अतिरिक्त	कर्मांच्या
अन्यत्र	Anyatra	otherwise	दूसरे कर्मों में लगा हुआ ही	(शिवाय) दुसऱ्या (गोष्टींमध्ये गुंतलेला)
लोकः	LokaaH	the World	मनुष्य समुदाय	(मनुष्यांचा) समाज
अयम्	Ayam	this	यह	हा
कर्मबन्धनः	Karma-bandhanaH	bound by action	कर्मों से बँधता है	कर्मांनी बांधलेला (बांधला जातो)
तदर्थम्	Tadartham	for that sake	उस यज्ञ के निमित्त ही भलीभाँति	त्यासाठी (यज्ञासाठी)
कर्म	Karma	action	कर्तव्यकर्म	कर्तव्यकर्म
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
मुक्तसङ्गः	Mukta-SangaH	free from attachment	आसक्ति से रहित होकर	आसक्तिरहित होऊन
समाचर	Samaachar	perform	करो	चांगल्याप्रकारे कर

अन्वय :- यज्ञार्थात् कर्मणः अन्यत्र अयम् लोकः कर्मबन्धनः । हे कौन्तेय ! मुक्तसङ्गः तदर्थम् कर्म समाचर ॥ ३ – ९ ॥

English translation:-

The World is bound by actions other than those performed for the sake of sacrifice. O Arjuna, therefore earnestly perform action for sacrifice alone, free from attachment.

हिन्दी अनुवाद :-

यज्ञके निमित्त किये जानेवाले कर्मों के अतिरिक्त अन्य कर्मों में रत हुआ मनुष्य कर्मों से बँधता है । इसलिये हे अर्जुन ! तुम आसक्ति से रहित होकर उस यज्ञ के निमित्त ही भलीभाँति कर्तव्यकर्म करो ।

मराठी भाषान्तर :-

यज्ञाच्या (यज्ञ म्हणजे लोककल्याणासाठी केलेला त्याग) हेतूने केलेल्या कर्मांच्या शिवाय इतर कर्म केले असता , ही माणसे कर्मबंधनात अडकतात . म्हणून हे कुन्तीपुत्रा अर्जुना , यज्ञासाठी करावयाचे कर्म तू आसक्ती सोडून करीत राहा .

विनोबांची गीताई :-

यज्ञार्थ कर्म सोडूनि लोक हा बांधिला असे
यज्ञार्थ आचरीं कर्म अर्जुना मुक्त संग तूं ॥ ३ – ९ ॥

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरा उवाच प्रजापतिः ।

अनेन प्रसविष्यध्वम् एषः वः अस्तु इष्टकामधुक् ॥ ३ – १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सहयज्ञाः	Saha-YadnyaaH	Together with sacrifice	यज्ञसहित	यज्ञाच्या बरोबर
प्रजाः	PrajaaH	mankind	प्रजाओं को	प्रजा (मानवजात)
सृष्ट्वा	Srushtvaa	having created	रचकर उन से	निर्माण करुन
पुरा	Puraa	in the beginning	कल्प के आदि में	कल्पारंभी
उवाच	Uvaacha	said	कहा (कि)	म्हणाला
प्रजापतिः	Prajaa-PatiH	Lord Brahma	प्रजापति ब्रह्मा (ने)	प्रजापति ब्रह्मदेव
अनेन	Anena	by this	इस यज्ञ के द्वारा	या (यज्ञाच्या) द्वारा
(यूयम्) प्रसविष्यध्वम्	Pra-Savi Shyadhvam	you should propagate	तुमलोग वृद्धि को प्राप्त होओ (और)	उत्कर्ष प्राप्त करुन घ्या
एषः	EshaH	this	यह यज्ञ	हा (यज्ञ)
वः	VaH	your	तुमलोगों को	तुम्हा लोकांना
अस्तु	Astu	let be	हो	होवो
इष्टकामधुक्	IShta-Kaama-Dhuk	milch cow of desired subjects and objects	इच्छित भोग प्रदान करनेवाला	इच्छिलेले मनोरथ पूर्ण करणारा

अन्वय :-

पुरा प्रजापतिः सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा “ अनेन (यूयम्) प्रसविष्यध्वम् एषः वः इष्टकामधुक् अस्तु “ (इति) उवाच ॥ ३ – १० ॥

English translation:-

Having created mankind in the beginning together with sacrifice (Yadnya) Lord Brahma said, “By this you should propagate; this shall be the milch cow of your desired subjects and objects.”

हिन्दी अनुवाद :-

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञसहित प्रजाओं को रचकर उनसे कहा कि तुमलोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुमलोगों को इच्छित भोग प्रदान करनेवाला हो ।

मराठी भाषान्तर :-

प्रजापती ब्रह्मदेवाने कल्पारंभी यज्ञासह सर्व मानवजात उत्पन्न केली व तो म्हणाला , “ या यज्ञाने तुम्ही सर्व उत्कर्ष प्राप्त करुन घ्या . हा यज्ञ तुमचे इच्छिलेले मनोरथ पूर्ण करणारा होवो . ”

विनोबांची गीताई :-

पूर्वी प्रजेसवें ब्रह्मा यज्ञ निर्मूनि बोलिला

पावा उत्कर्ष यज्ञानें हा तुम्हां काम धेनु चि ॥ ३ – १० ॥

देवान् भावयत अनेन ते देवाः भावयन्तु वः ।

परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ ॥ ३ – ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
देवान्	Devaan	gods	देवताओं को	देवांना
भावयत	Bhaavayata	nourish	उन्नत करो और	तुम्ही संतुष्ट करा
अनेन	Anena	with this	इस यज्ञ के द्वारा	याने (यज्ञाने)
ते	Te	those	वे	ते
देवाः	DevaaH	gods	देवता	देव
भावयन्तु	Bhaavayantu	may nourish	उन्नत करें	संतुष्ट करोत
वः	VaH	you	तुमलोगों को	तुम्हाला
परस्परम्	Parasparam	one another	एक – दूसरे को	एकमेकांना
भावयन्तः	BhaavayantaH	nourishing	उन्नत करते हुए	संतुष्ट करून
श्रेयः	ShreyaH	good	कल्याण को	कल्याण
परम्	Param	the highest	परम	श्रेष्ठ
अवाप्स्यथ	Avaapsyatha	shall attain	प्राप्त हो जाओगे	(तुम्ही) प्राप्त व्हाल

अन्वय :-

अनेन (यूयम्) देवान् भावयत , ते देवाः वः भावयन्तु , (एवम्) परस्परम् भावयन्तः ; परम् श्रेयः अवाप्स्यथ ॥ ३ – ११ ॥

English translation:-

Cherish the gods with this; and may those gods cherish you; thus cherishing one another, you shall attain the supreme good.

हिन्दी अनुवाद :-

तुम इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुमलोगों को उन्नत करें इसप्रकार निःस्वार्थभाव से एक – दूसरे को उन्नत करते हुए तुमलोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।

मराठी भाषान्तर :-

या यज्ञाने तुम्ही देवांना संतुष्ट करा आणि ते देव तुम्हाला संतुष्ट करतील . याप्रमाणे परस्परांना संतुष्ट करून तुम्ही सर्वजण , श्रेष्ठ कल्याण प्राप्त करून घ्याल .

विनोबांची गीताई :-

रक्षा देवांस यज्ञानें तुम्हां रक्षोत देव ते
एकमेकांस रक्षूनि पावा कल्याण सर्व हि ॥ ३ – ११ ॥

इष्टान् भोगान् हि वः देवाः दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।

तैः दत्तान् अप्रदाय एभ्यः यः भुङ्क्ते स्तेनः एव सः ॥ ३ – १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इष्टान्	Istaan	desired	इच्छित	इच्छिलेले
भोगान्	Bhogaan	objects	भोग	भोग
हि	Hi	so	निश्चय ही	कारण
वः	VaH	to you	तुम लोगों को बिना माँगे ही	तुम्हाला
देवाः	devaaH	gods	देवता	देव
दास्यन्ते	Daasyante	will give	देते रहेंगे	देतील
यज्ञभाविताः	Yadnya-BhaavitaaH	cherished by sacrifice	यज्ञ के द्वारा बढ़ाये हुए	यज्ञाने संतुष्ट झालेल्या
तैः	TaiH	by them	उन देवताओं के द्वारा	त्यानी (देवांनी)
दत्तान्	Dattan	given	दिये हुए (भोगों को)	दिलेले (भोग)
अप्रदाय	Apradaaya	without offering	बिना दिये (स्वयम्)	अर्पण न करता (स्वतःच)
एभ्यः	EbhyaH	to them	इनको	ह्यांना
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
भुङ्क्ते	Bhunkte	enjoys	भोगता है	उपभोगतो
स्तेनः	StenaH	thief	चोर	चोर
एव	Eva	verily	ही है	खरोखर
सः	SaH	he	वह	तो

अन्वय :-

यज्ञभाविताः देवाः वः इष्टान् भोगान् दास्यन्ते। तैः दत्तान् एभ्यः अप्रदाय, यः भुङ्क्ते सः हि स्तेनः एव ॥ ३ – १२ ॥

English translation:-

"Cherished by acts of sacrifice (Yadnya) gods shall bestow on you the desired enjoyments." He who enjoys what is given by them (gods) without returning (offering) them anything, is indeed a thief.

हिन्दी अनुवाद :-

यज्ञके द्वारा तृप्त हुए देवता, तुमलोगों को बिना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। इस प्रकार उन देवताओं के द्वारा दिये हुए भोगों को, जो पुरुष इनको बिना दिये भोगता है, वह चोर ही है।

मराठी भाषान्तर :-

यज्ञाने तृप्त झालेले देव तुम्हाला इच्छिलेले भोग देतील. त्यांनी दिलेले भोग त्यांना अर्पण न करता जो स्वतःच त्यांचा उपभोग घेतो तो खरोखर चोरच होय.

विनोबांची गीताई :-

यज्ञ तुष्ट तुम्हां देव भोग देतील वांछित
त्यांचें त्यांस न देतां ज़ो खाय तो एक चोर चि ॥ ३ – १२ ॥

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।

भुञ्जते ते तु अघम् पापाः ये पचन्ति आत्मकारणात् ॥ ३ – १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यज्ञशिष्टाशिनः	Yadnya-shishtaashinaH	who eat remnants of the sacrifice	यज्ञ से बचे हुए अन्न को खानेवाले	यज्ञ झाल्यावर शिल्लक राहिलेले अन्न खाणारे
सन्तः	SantaH	the righteous	श्रेष्ठ पुरुष	सज्जन
मुच्यन्ते	Muchyante	are freed	मुक्त हो जाते हैं (और)	मुक्त होऊन जातात
सर्वकिल्बिषैः	Sarva-KilbishaiH	from all sins	सब पापों से	सर्व पापांपासून
भुञ्जते	Bhunjyate	eat	खाते हैं	खातात
ते	Te	those	वे	ते
तु	Tu	indeed	तो	तर
अघम्	Agham	sin	पाप को ही	पापच
पापाः	PaaPaaH	sinful ones	पापीलोग	पापीजन
ये	Ye	who	जो	जे
पचन्ति	Pachyanti	cook	अन्न पकाते हैं	अन्न शिजवितात
आत्मकारणात्	Aatma-kaaraNaat	for their own sake	अपने शरीर पोषण करने के लिये ही	स्वतःच्या शरीर पोषणासाठी

अन्वय :-

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः सर्वकिल्बिषैः मुच्यन्ते । ये आत्मकारणात् पचन्ति , ते तु पापाः अघम् भुञ्जते ॥ ३ – १३ ॥

English translation:-

The righteous ones who eat the remains of Yadnya / sacrifice are freed from all sins; but the sinful ones who cook food only for themselves, they verily eat sin.

हिन्दी अनुवाद :-

यज्ञसे बचे हुए अन्न को खानेवाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं; और जो पापीलोग अपने शरीरपोषण करने के लिये ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

यज्ञातील शिल्लक राहिलेले अन्न खाणारे सज्जन पापांपासून मुक्त होतात. परंतु जे केवळ आपल्यासाठीच अन्न शिजवितात आणि सेवन करतात ते पापीलोक तर खरोखर पापच भक्षण करतात.

विनोबांची गीताई :-

यज्ञांत उरलें खाती संत ते दोष ज़ाळिती
रांधिती आपुल्यासाठीं पापी ते पाप भक्षिती ॥ ३ – १३ ॥

अन्नात् भवन्ति भूतानि पर्जन्यात् अन्नसम्भवः ।

यज्ञात् भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ ३ – १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अन्नात्	Annaat	from food	अन्न से	अन्नापासून
भवन्ति	Bhavanti	come forth	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
भूतानि	Bhootaani	beings	सम्पूर्ण प्राणी	सर्व प्राणी
पर्जन्यात्	Parjanyaat	from rain	वृष्टि से होती है	पर्जन्यवृष्टीपासून
अन्नसम्भवः	Anna-Sam-BhavaH	production of food	अन्न की उत्पत्ति	अन्नाची निर्मिती (होते)
यज्ञात्	Yadnyaat	from sacrifice	यज्ञ से	यज्ञापासून
भवति	Bhavati	arises	होती है और	होते
पर्जन्यः	ParjanyaH	rain	वृष्टि	पर्जन्यवृष्टी
यज्ञः	YadnyaH	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
कर्मसमुद्भवः	Karma-Sam-Ud-BhavaH	born of action	विहित कर्मों से उत्पन्न होनेवाला है	कर्मांपासून निर्माण (होतो)

अन्वय :-

भूतानि अन्नात् भवन्ति , पर्जन्यात् अन्नसम्भवः (भवति) , पर्जन्यः यज्ञात् भवति , यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ ३ – १४ ॥

English translation:-

From food beings come, from rain food is produced; from Yadnya rain proceeds; Yadnya is born of karma.

हिन्दी अनुवाद :-

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं , अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है , वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होनेवाला है ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व प्राणी अन्नापासून उत्पन्न होतात . पर्जन्यवृष्टीमुळे अन्नाची निर्मिती होते . यज्ञापासून पर्जन्य उत्पन्न होतो आणि यज्ञ हा कर्मांपासून निर्माण होतो .

विनोबांची गीताई :-

अन्नापासूनि हीं भूतें पर्जन्यांतूनि अन्न तें
यज्ञें पर्जन्य तो होय यज्ञ कर्मामुळें घडे ॥ ३ – १४ ॥

कर्म ब्रह्मोद्भवम् विद्धि ब्रह्म अक्षरसमुद्भवम् ।

तस्मात् सर्वगतम् ब्रह्म नित्यम् यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ ३ – १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्म	Karma	action	कर्मसमुदाय को	कर्म
ब्रह्मोद्भवम्	Brahma-Ud-Bhavam	arisen from Brahma	वेद से उत्पन्न	ब्रह्मापासून उत्पन्न झालेले
विद्धि	Viddhi	know	तुम जान लो	तू जाण
ब्रह्म	Brahma	Brahma	वेद को	ब्रह्म
अक्षर	Akshara	the Imperishable	अविनाशी	अविनाशी
समुद्भवम्	Samud-Bhavam	arisen from	(परमात्मा से) उत्पन्न हुआ	(परमात्म्यापासून) उत्पन्न झालेले
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इस से (सिद्ध होता है कि)	म्हणून
सर्वगतम्	Sarvagatam	all pervading	सर्वव्यापी	सर्वव्यापी
ब्रह्म	Brahma	Brahma	परम अक्षर परमात्मा	ब्रह्म (अक्षर परमात्मा)
नित्यम्	Nityam	ever	सदा ही	नेहमीच
यज्ञे	Yadnye	in sacrifice	यज्ञ में	यज्ञामध्ये
प्रतिष्ठितम्	Prati-Sthitam	is established	प्रतिष्ठित है	स्थिर असते

अन्वय :-

कर्म ब्रह्मोद्भवम् विद्धि , ब्रह्म अक्षरसमुद्भवम् , तस्मात् सर्वगतम् ब्रह्म यज्ञे नित्यम् प्रतिष्ठितम् ॥ ३ – १५ ॥

English translation:-

Know that action (Karma) arises from the Veda and the Veda from the Imperishable. The all pervading Veda is therefore ever centered in Yadnya.

हिन्दी अनुवाद :-

कर्मसमुदाय को तुम वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है यह जान लो। इस से यह सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

मराठी भाषान्तर :-

कर्म वेदापासून उत्पन्न झालेले आहे आणि वेद अविनाशी परमात्म्यापासून उत्पन्न झालेला आहे . म्हणून सर्वव्यापक परमात्मा यज्ञात सदासर्वदा राहतो हे तू जाण.

विनोबांची गीताई :-

प्रकृतीपासुनी कर्म ब्रह्मीं प्रकृति राहिली
ऐसें व्यापक तें ब्रह्म यज्ञांत भरलें सदा ॥ ३ – १५ ॥

एवम् प्रवर्तितम् चक्रम् न अनुवर्तयति इह यः।

अघायुः इन्द्रियारामः मोघम् पार्थ सः जीवति ॥ ३ – १६॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
प्रवर्तितम्	Pravartitam	set revolving	परम्परा से प्रचलित	(परंपरेने) प्रचलित असणाऱ्या
चक्रम्	Chakram	wheel	सृष्टिचक्र (के अनुकूल)	सृष्टिचक्र
न	Na	not	नहीं	नाही
अनुवर्तयति	Anu-Vartayati	follows	बरतता है अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन करता है	अनुसरण करतो (कर्तव्याचे पालन करतो)
इह	Iha	here	इस लोकमें	या जगामध्ये
यः	YaH	who	जो पुरुष	जो पुरुष
अघायुः	Agha - AayuH	sinful	पापी (आयुष्य बितानेवाला पुरुष)	पापी
इन्द्रियारामः	Indriyaa – raamaH	rejoicing in the senses	इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करनेवाला	इंद्रियांच्या भोगामध्ये रमणारा
मोघम्	Mogham	in vain	व्यर्थ ही	व्यर्थच
पार्थ	Paartha	O Arjun!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सः	SaH	he	वह (पुरुष)	तो (पुरुष)
जीवति	Jeevati	lives	जीता है	जिवंत राहतो

अन्वय :-

हे पार्थ ! एवम् प्रवर्तितम् चक्रम् यः इह न अनुवर्तयति , सः इन्द्रियारामः अघायुः मोघम् जीवति ॥ ३ – १६ ॥

English translation:-

In this world, he who does not follow the wheel thus revolving, is living in sin and rejoicing in the senses, O Arjuna, he lives in vain.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार परम्परा से प्रचलित सृष्टिचक्र के अनुकूल नहीं बरतता है , अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता है ; इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करनेवाला और पापी आयुष्य बितानेवाला वह पुरुष व्यर्थ ही जीता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! या जगात , याप्रमाणे सुरु असलेल्या सृष्टीचक्राचे जो पुरुष अनुसरण करत नाही ; तो विषयलंपट , पापी पुरुष व्यर्थ जीवन जगतो .

विनोबांची गीताई :-

प्रेरिलें हें असें चक्र ह्या लोकीं ज़ो न चालवी
इंद्रियासक्त तो पापी व्यर्थ जीवन घालवी ॥ ३ – १६ ॥

यः तु आत्मरतिः एव स्यात् आत्मतृप्तः च मानवः ।
आत्मनि एव च संतुष्टः तस्य कार्यम् न विद्यते ॥ ३ – १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	Who	जो (परमात्मा को लक्ष्य मानकर)	जो
तु	Tu	but	परंतु	परंतु
आत्मरतिः	Aatma - RatiH	rejoices in the self	परमात्मा में ही रमण करनेवाला	आत्मस्वरूपात रमलेला
एव	Eva	only	केवल	केवळ
स्यात्	Syaat	may be	होता है	असतो
आत्मतृप्तः	Aatma-TruptaH	satisfied in the self	परमात्मा में ही तृप्त	आत्मस्वरूपात समाधानी
च	Cha	and	और	आणि
मानवः	MaanavaH	the man	मनुष्य	मनुष्य
आत्मनि	Aatmani	in the self	परमात्मा में ही	आत्मस्वरूपात
एव	Eva	only	केवल	केवळ
च	Cha	and	और	आणि
संतुष्टः	San - TushtaH	contended	सन्तुष्ट	सन्तुष्ट
तस्य	Tasya	his	उस के लिये	त्याला
कार्यम्	Kaaryam	work to be done	कोई कर्तव्य	कोणतेही कर्तव्य
न	Na	not	नहीं	नाही
विद्यते	Vidyate	is	होता है	असते

अन्वय :-

यः तु मानवः आत्मरतिः एव , आत्मतृप्तः च , आत्मनि एव च संतुष्टः स्यात् , तस्य कार्यम् न विद्यते ॥ ३ – १७ ॥

English translation:-

But the man who rejoices in the Self, is satisfied with the Self, and is content in the Self alone, for him verily there is no obligatory duty.

हिन्दी अनुवाद :-

परंतु जो मनुष्य आत्मा में ही रमण करनेवाला है और आत्मा में ही तृप्त तथा आत्मा में ही संतुष्ट होता है उसके लिये कोई कर्तव्य नहीं रहता है।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु जो पुरुष आत्मस्वरूपामध्ये रमलेला असून आत्मस्वरूपामध्येच तृप्त आणि संतुष्ट असतो त्याला कोणत्याही प्रकारचे कर्तव्य शिल्लक राहात नाही .

विनोबांची गीताई :-

परी आत्म्यांत ज्ञो खेळे आत्मा भोगूनि तृप्त ज्ञो
आत्म्यामध्यें चि संतुष्ट त्याचें कर्तव्य संपलें ॥ ३ – १७ ॥

न एव तस्य कृतेन अर्थः न अकृतेन इह कश्चन ।

न च अस्य सर्वभूतेषु कश्चित् अर्थव्यपाश्रयः ॥ ३ – १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
एव	Eva	even	वैसे ही	तसेच
तस्य	Tasya	of him	उस (महापुरुष) का	त्या (महापुरुषाचे)
कृतेन	Krutena	by action	कर्म करने से	कर्म करण्याने
अर्थः	ArthaH	concern	प्रयोजन (रहता है और)	हेतू (प्रयोजन)
न	Na	not	नहीं	नाही
अकृतेन	A - Krutena	by actions not done	कर्मों से न करने से	कर्म न करण्याने
इह	Iha	here	इस (विश्व में)	या (विश्वामध्ये)
कश्चन	Kashchana	any	कोई भी	कोणतेही
न	Na	not	नहीं	नाही
च	Cha	and	और	आणि
अस्य	Asya	of this (man)	इस (महापुरुष का)	याचा (महापुरुषाचा)
सर्वभूतेषु	Sarva - Bhuteshu	in all beings	सम्पूर्ण प्राणियों में भी	संपूर्ण प्राणिमात्रात
कश्चित्	Kashchit	any	किंचिन्मात्र भी	कोणताही
अर्थ-व्यपाश्रयः	Artha-vya-paashrayaH	depending for any object	स्वार्थ का संबंध	स्वार्थाचा संबंध

अन्वय :-

इह कृतेन तस्य अर्थः न एव, अकृतेन (अपि) कश्चन (तस्य अर्थः) न, (तथा) सर्व - भूतेषु च अस्य कश्चित् अर्थव्यपाश्रयः न ॥ ३ – १८ ॥

English translation:-

In this world, for him there is no object to acquire by doing an action; nor is there any loss by not doing an action; nor does he depend upon anybody for anything.

हिन्दी अनुवाद :-

उस महापुरुष का इस विश्व में न तो कर्म करनेसे कोई प्रयोजन रहता है और न तो कर्मों के न करनेसे ही कोई प्रयोजन रहता है तथा सम्पूर्ण प्राणियों में भी इसका किंचिन्मात्र भी स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं रहता है।

मराठी भाषान्तर :-

कर्म करण्यात जसा त्या महापुरुषाचा कोणताही स्वार्थ (हेतू) नसतो तसेच कर्म न करण्यातही त्याचा काही हेतू नसतो. त्याचप्रमाणे सर्व प्राणिमात्रांशी त्याचा कोणताही वैयक्तिक स्वार्थसंबंध नसतो.

विनोबांची गीताई :-

केल्यानें वा न केल्यानें त्यास भावार्थ सारखा
कोणामधें कुठें त्याचा न कांही लोभ गुंतला ॥ ३ – १८ ॥

तस्मात् असक्तः सततम् कार्यम् कर्म समाचर ।

असक्तः हि आचरन् कर्म परम् आप्नोति पूरुषः ॥ ३ – १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इसलिये (तुम)	म्हणून
असक्तः	AsaktaH	without attachment	आसक्ति से रहित होकर	आसक्तिरहित होऊन
सततम्	Satatam	always	निरन्तर	निरंतर
कार्यम्	Kaaryam	which should be done	कर्तव्य	शास्त्रविहित
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
समाचर	Sam - Aachara	perform	भलीभाँति करते रहो	चांगल्याप्रकारे तू करीत राहा
असक्तः	AsaktaH	without attachment	आसक्ति से रहित होकर	आसक्तिरहित होऊन
हि	Hi	because	क्योंकि	कारण
आचरन्	Aacharan	performing	आचरण करता हुआ	आचरणात आणणारा
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
परम्	Param	the Supreme	परमात्मा को	परमात्म्याला
आप्नोति	Aapnoti	attains	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करुन घेतो
पूरुषः	PoorushaH	man	मनुष्य	मनुष्य

अन्वय :-

तस्मात् (त्वम्) असक्तः (सन्) सततम् कार्यम् कर्म समाचर , हि पूरुषः असक्तः (सन्) कर्म आचरन् , परम् आप्नोति ॥ ३ - १९ ॥

English translation:-

Therefore, constantly perform your obligatory duty without attachment; for, by doing duty without attachment man verily obtains the Supreme.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये तुम निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्यकर्म को भलीभाँति करते रहो क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को ही प्राप्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

म्हणून तू आसक्ती सोडून सतत कर्तव्यकर्मांचे चांगल्याप्रकारे आचरण कर . कारण आसक्तिरहित पुरुषच कर्तव्यकर्म करीत परमात्मस्वरूप प्राप्त करतो .

विनोबांची गीताई :-

म्हणूनि नित्य निःसंग करीं कर्तव्य कर्म तूं
निःसंग करितां कर्म कैवल्य पद पावतो ॥ ३ – १९ ॥

कर्मणा एव हि संसिद्धिम् आस्थिताः जनकादयः ।
लोकसंग्रहम् एव अपि सम्पश्यन् कर्तुम् अर्हसि ॥ ३ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्मणा	Karmanaa	by action	(आसक्ति रहित) कर्म द्वारा	(आसक्तिरहित) कर्माचरणाने
एव	Eva	only	ही	केवळ
हि	Hi	verily	इसलिये	म्हणून
संसिद्धिम्	Sam-Siddhim	perfection	परमसिद्धि को	परमसिद्धीला
आस्थिताः	AasthitaaH	attained	प्राप्त हुए थे	प्राप्त झाले होते
जनकादयः	JanakaadayaH	King Janaka and others	राजा जनक और अन्य ज्ञानीजन	राजा जनक इत्यादी ज्ञानीजन
लोक - संग्रहम्	Loka - Sangraham	welfare and protection of the people	लोककल्याण को	जनकल्याणाकडे
एव	Eva	only	ही	केवळ
अपि	Api	also	भी	तसेच
सम् - पश्यन्	Sam - Pashyan	having in view	देखते हुए	दृष्टी ठेवून
कर्तुम्	Kartum	to perform	कर्म करने	कर्म करण्यात
अर्हसि	Arhasi	You should	योग्य है (अर्थात् तुझे कर्म करना ही उचित है)	तू योग्य आहेस (म्हणजे तुला कर्म करणे हेच उचित आहे)

अन्वय :-

हि जनकादयः कर्मणा एव संसिद्धिम् आस्थिताः । (त्वम्) अपि लोकसंग्रहम् एव सम्पश्यन् कर्तुम् अर्हसि ॥ ३ – २० ॥

English translation:-

King Janaka and others indeed achieved perfection by action; having an eye on the welfare and protection of the people (in their respective kingdoms) and therefore, you should also perform action.

हिन्दी अनुवाद :-

जनकादि ज्ञानीजन भी आसक्तिरहित कर्मद्वारा ही परमसिद्धि को प्राप्त हुए थे । इसलिये लोककल्याण को देखते हुए भी तुम कर्म करने योग्य हो अर्थात् तुम्हें कर्म करना ही उचित है ।

मराठी भाषान्तर :-

राजा जनकादी पुरुष सुद्धा कर्मानेच मोक्षरूपी परमसिद्धीला प्राप्त झाले . म्हणून निरपेक्ष जनकल्याणाकडे नीट लक्ष देऊन , तुलाही कर्म करणे योग्य आहे .

विनोबांची गीताई :-

कर्म - द्वारा चि सिद्धीस पावले जनकादिक
करीं तूं कर्म लक्षूनि लोक संग्रह धर्म हि ॥ ३ – २० ॥

यत् यत् आचरति श्रेष्ठः तत् तत् एव इतरः जनः ।

सः यत् प्रमाणम् कुरुते लोकः तत् अनुवर्तते ॥ ३ – २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	Whatever	जो	जे
यत्	Yat	-	जो	जे
आचरति	Aacharati	does	आचरण करता है	आचरण करतो
श्रेष्ठः	ShreShthaH	the best	श्रेष्ठ पुरुष	श्रेष्ठ पुरुष
तत्	Tat	that	वैसा	ते
तत्	Tat	-	वैसा	ते
एव	Eva	only	ही (आचरण करते हैं)	केवळ
इतरः	ItaraH	the other	अन्य	अन्य
जनः	JanaH	people	पुरुष	लोक
सः	SaH	he	वह (महापुरुष)	तो
यत्	Yat	what	जो कुछ	ज्या (गोष्टी)
प्रमाणम्	Pramaanam	standard	प्रमाण	प्रमाण (म्हणून मान्य)
कुरुते	Kurute	does	करता है	करतो
लोकः	LokaH	the World	समस्त मनुष्य - समुदाय	सर्व मनुष्यसमुदाय
तत्	Tat	that	उसी के	त्यालाच
अनुवर्तते	Anuvartate	follows	अनुसार बरतने लग जाता है	अनुसरुन वागू लागतो

अन्वय :-

यत् यत् श्रेष्ठः आचरति तत् तत् एव इतरः जनः (आचरति) । सः यत् प्रमाणम् कुरुते , लोकः तत् अनुवर्तते ॥ ३ – २१ ॥

English translation:-

Whatever a great man does, that is followed by others; people go by the example he sets up.

हिन्दी अनुवाद :-

श्रेष्ठ पुरुष जो - जो आचरण करता है अन्य पुरुष भी वैसा - वैसा ही आचरण करते हैं । वह महापुरुष जो कुछ प्रमाण कर देता है उसी के अनुसार , समस्त मनुष्य समुदाय अनुकरण करने लग जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

श्रेष्ठ पुरुष जसे वागतो तसेच अन्य लोकसुद्धा आचरण करू लागतात . तसेच तो पुरुष ज्या गोष्टी प्रमाण मानतो त्याचेच अन्य लोकसुद्धा अनुकरण करतात .

विनोबांची गीताई :-

जें जें आचरितो श्रेष्ठ तें तें चि दुसरे जन
तो मान्य करितो जें जें लोक चालवितात तें ॥ ३ – २१ ॥

न मे पार्थ अस्ति कर्तव्यम् त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।

न अनवाप्तम् अवाप्तव्यम् वर्ते एव च कर्मणि ॥ ३ – २२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	न तो	नाही
मे	Me	my	मुझे (इन)	मला
पार्थ	Paartha	O Arjun !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
अस्ति	Asti	is	है	आहे
कर्तव्यम्	Kartavyam	duty	कर्तव्य कर्म	कर्तव्य कर्म
त्रिषु	TriShu	in the three	तीनों	तिन्ही
लोकेषु	LokeShu	Worlds	लोकों में	लोकांत
किञ्चन	Kin - Chan	anything	कुछ	कोणतेही
न	Na	not	न कोई भी	नाही
अनवाप्तम्	Anavaaptam	unattained	अप्राप्त है	न मिळालेली
अवाप्तव्यम्	Avaaptavyam	to be attained	प्राप्त करने योग्य वस्तु	प्राप्त करुन घेण्यास योग्य गोष्ट
वर्ते	Varte	am	बरतता हूँ	मी करतो
एव	Eva	also	ही	केवळ
च	Cha	and	और	आणि
कर्मणि	KarmaNi	in action	कर्म में	कर्मात (कर्मांचे आचरण)

अन्वय :-

हे पार्थ ! (यदि अपि) मे त्रिषु लोकेषु किञ्चन कर्तव्यम् न अस्ति , अनवाप्तम् अवाप्तव्यम् च न (अस्ति , तथापि अहम्) कर्मणि वर्ते एव ॥ ३ – २२ ॥

English translation:-

O Arjuna! there is no obligatory duty in these three worlds, that is yet to be performed by Me, nor is there anything unattained that should be attained by Me; yet I engage Myself in action.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मुझे इन तीनों लोकों में न तो कुछ कर्तव्य है और न कोई भी प्राप्त करने योग्य वस्तु अप्राप्त है ; फिर भी मैं कर्म में ही संलग्न हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना, तिन्ही लोकात मला कोणतेही कर्तव्यकर्म बाकी नाही . मला न मिळालेले अथवा मला मिळवण्यायोग्य असेही काही बाकी नाही , तरी सुद्धा मी सतत कर्तव्यकर्म करीत असतो .

विनोबांची गीताई :-

करावें मिळवावेंसे नसे कांहीं ज़री मज
तिन्ही लोकीं तरी पार्था कर्मीं मी वागतों चि कीं ॥ ३ – २२ ॥

यदि हि अहम् न वर्तेयम् जातु कर्मणि अतन्द्रितः ।

मम वर्त्म अनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ३ – २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदि	Yadi	if	यदि	जर
हि	Hi	surely	क्योंकि	कारण
अहम्	Aham	I	मैं	मी
न	Na	not	न / नही	नाही
वर्तेयम्	Varteyam	engage in action	बरतूँ	वागलो (कार्यरत झालो)
जातु	Jaatu	even	कदाचित्	कदाचित
कर्मणि	Karmani	in action	कर्मों में	कर्मामध्ये
अतन्द्रितः	AtandritaH	unwearied	सावधान होकर	सावधानतेने (निरलसपणे)
मम	Mama	my	मेरे ही	माझ्या
वर्त्म	Vartma	path	मार्ग का	मार्गाचे
अनुवर्तन्ते	Anuvartante	follow	अनुसरण करते हैं	अनुसरण करतील
मनुष्याः	ManuShyaaH	men	सब पुरुष	सर्व माणसे
पार्थ	Paartha	O Arjun !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सर्वशः	SarvashaH	in every way	सर्व प्रकारसे	सर्व प्रकारांनी

अन्वय :-

यदि हि अहम् अतन्द्रितः (सन्) कर्मणि जातु न वर्तेयम् (तर्हि) हे पार्थ ! मनुष्याः सर्वशः मम वर्त्म अनुवर्तन्ते ॥ ३ – २३ ॥

English translation:-

O Arjun! If I ever fail to engage in proper action with great care; people will follow my footsteps and act just like Me.

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि हे अर्जुन ! यदि कदाचित् मैं सावधान होकर कर्मों में न रत होऊँ तो बड़ी हानि हो जायेगी , क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

कारण जर मी आळस सोडून कर्म केले नाही तर हे अर्जुना, लोक सर्वप्रकारे माझ्याच मार्गाचे अनुसरण करतील.

विनोबांची गीताई :-

मी चि कर्मी न वागेन ज़री आळस झाडुनी
सर्वथा लोक घेतील माझें वर्तन तें मग ॥ ३ – २३ ॥

उत्सीदेयुः इमे लोकाः न कुर्याम् कर्म चेत् अहम् ।

सङ्करस्य च कर्ता स्याम् उपहन्याम् इमाः प्रजाः ॥ ३ – २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उत्सीदेयुः	UtseedeyuH	would perish	नष्ट भ्रष्ट हो जायेंगे	नष्ट भ्रष्ट होऊन जातील
इमे	Ime	these	ये	ही
लोकाः	LokaaH	Worlds	सब मनुष्यगण	सर्व माणसे
न	Na	not	न / नही	नाही
कुर्याम्	Kuryaam	would do	करूँ तो	केले
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
चेत्	Chet	if	यदि	जर
अहम्	Aham	I	मैं	मी
सङ्करस्य	San - Karasya	Of confusion of castes	संकरता का	वर्णसंकराचा
च	Cha	and	और	आणि
कर्ता	Kartaa	author	करनेवाला	कर्ता
स्याम्	Syaam	would be	मैं होऊँ (तथा)	मी होईन
उपहन्याम्	Upahan - Yaam	would destroy	नष्ट करनेवाला बनूँ	मी नाश करणारा होईन
इमाः	ImaaH	these	इस	या सर्व
प्रजाः	PrajaaH	beings	समस्त प्रजा को	प्रजाजनांचा

अन्वय :-

अहम् कर्म न कुर्याम् चेत् , इमे लोकाः उत्सीदेयुः , सङ्करस्य च कर्ता स्याम् , इमाः प्रजाः (च) उपहन्याम् ॥ ३ – २४ ॥

English translation:-

These three worlds would perish if I did not do any action; I should be the cause of confusion of castes and I should become the destroyer of these people.

हिन्दी अनुवाद :-

यदि मैं कर्म न करूँ तो ये सर्व लोक नष्ट - भ्रष्ट हो जायेंगे और मैं संकरता का करनेवाला तथा इस समस्त प्रजा को नष्ट करनेवाला बन जाऊँगा ।

मराठी भाषान्तर :-

मी जर कोणतेच कर्म केले नाही तर हे सर्व लोक नाश पावतील आणि मी विनाकारण वर्णसंकराचा कर्ता मानला जाऊन या सर्व प्रजेचा नाश करणारा सिद्ध होईन .

विनोबांची गीताई :-

सोडीन मी ज़री कर्म नष्ट होतील लोक हे
होईन संकर द्वारा मी चि घातास कारण ॥ ३ – २४ ॥

सक्ताः कर्मणि अविद्वांसः यथा कुर्वन्ति भारत ।

कुर्यात् विद्वान् तथा असक्तः चिकीर्षुः लोकसंग्रहम् ॥ ३ – २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सक्ताः	SaktaaH	attached	आसक्त हुए	आसक्त असणारे
कर्मणि	KarmaNi	to action	कर्म में	कर्मामध्ये
अविद्वांसः	AvidvaansaH	the ignorant	अज्ञानीजन	अज्ञानी लोक
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार	ज्याप्रमाणे
कुर्वन्ति	Kurvanti	act	कर्म करता हैं	कर्म करतात
भारत	Bhaarata	O Arjun !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
कुर्यात्	Kuryaat	act	करे	करावे
विद्वान्	Vidvaan	the wise	ज्ञानी पुरुष (भी)	ज्ञानी माणूस
तथा	Tathaa	so	उसी प्रकार (कर्म)	त्याचप्रमाणे
असक्तः	AsaktaH	unattach ed	आसक्ति रहित	आसक्तिरहित
चिकीर्षुः	ChikeerShuH	wishing	करना चाहता हुआ	इच्छा असणाऱ्या
लोकसंग्रहम्	Lokasan-Graham	the welfare of the World	लोक - कल्याण	जनकल्याण

अन्वय :-

हे भारत ! अविद्वांसः यथा कर्मणि सक्ताः (कर्म) कुर्वन्ति , तथा लोकसंग्रहम् चिकीर्षुः विद्वान् असक्तः (सन् कर्म) कुर्यात् ॥ ३ – २५ ॥

English translation:-

As the ignorant one (unenlightened) acts from attachment to action, O Arjun, so should the wise one (enlightened) acts without attachment, desirous of the welfare of the multitude.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस प्रकार कर्म में आसक्त हुए अज्ञानीजन कर्म करते हैं ; उसी प्रकार आसक्ति रहित विद्वान् भी लोक कल्याण करना चाहता हुआ कर्म करें ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! कर्मामध्ये आसक्त असलेले अज्ञानी लोक ज्याप्रमाणे कर्म करण्यात गुंततात ; त्याचप्रमाणे लोककल्याणाची इच्छा असणाऱ्या ज्ञानी पुरुषानेही आसक्तिरहित होऊन आपले कर्म अखंड करावे .

विनोबांची गीताई :-

गुंतूनि करिती अज्ञ ज्ञात्यानें मोकळेपणें
करावें कर्म तैसें चि इच्छुनी लोक संग्रह ॥ ३ – २५ ॥

न बुद्धिभेदम् जनयेत् अज्ञानाम् कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत् सर्व कर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥ ३ – २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
बुद्धिभेदम्	Buddhi - Bhedam	unsettlement in the minds	बुद्धि में भ्रम अर्थात् कर्मों में अश्रद्धा	बुद्धिभ्रम म्हणजेच कर्मांमध्ये अश्रद्धा
जनयेत्	Janayet	should produce	उत्पन्न करे	उत्पन्न करावा
अज्ञानाम्	Adnyaanaam	of the ignorant	अज्ञानियों को	अज्ञानी पुरुषांचा
कर्मसङ्गिनाम्	Karma - Sanginaam	of the persons attached to actions	शास्त्रविहित कर्मों में आसक्तिवाले	शास्त्रोक्त कर्मांमध्ये आसक्ती असणाऱ्या
जोषयेत्	JoShayet	should engage	करवा ले	करवून घ्यावीत
सर्व	Sarva	all	समस्त	सर्व
कर्माणि	KarmaaNi	actions	शास्त्रविहित कर्म	शास्त्रविहित कर्मे
विद्वान्	Vidvaan	the wise	ज्ञानी पुरुष	ज्ञानी पुरुष
युक्तः	YuktaH	the balanced one	परमात्मा के स्वरुप में अटल स्थित हुए	संतुलित मनोवृत्तीने
समाचरन्	Sam - Aacharan	performing	भलीभाँति करता हुआ	चांगल्याप्रकारे आचरण करीत

अन्वय :-

विद्वान् कर्मसङ्गिनाम् अज्ञानाम् बुद्धिभेदम् न जनयेत् (किन्तु) युक्तः समाचरन् सर्व कर्माणि जोषयेत् ॥ ३ – २६ ॥

English translation:-

Let not the wise man unsettle the mind of ignorant people attached to the action. By doing persistently and precisely let the wise induce others in all good activities.

हिन्दी अनुवाद :-

परमात्मा के स्वरुप में अटल स्थित हुए ज्ञानी पुरुषको चाहिये कि वह शास्त्रविहित कर्मों में आसक्तिवाले अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम अर्थात् कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न न करे। किंतु स्वयं भी शास्त्रविहित समस्त कर्म भलीभाँति करता हुआ उनसे भी वैसे ही कर्म करवा ले।

मराठी भाषान्तर :-

ज्ञानी पुरुषाने कर्मांच्या ठायी गुंतलेल्या अज्ञानी लोकांचा बुद्धिभेद करु नये. उलट स्वतः सर्व कर्मे चांगल्याप्रकारे आचरुन अज्ञानी लोकांकडून तशी कर्मे प्रेमपूर्वक करवून घ्यावीत .

विनोबांची गीताई :-

नेणत्या कर्म निष्ठांचा बुद्धि - भेद करुं नये
गोडी कर्मांत लावावी समत्वें आचरुनि तीं ॥ ३ – २६ ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।

अहङ्कार - विमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते ॥ ३ – २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रकृतेः	PrakruteH	of nature	प्रकृति के	प्रकृतीच्या
क्रियमाणानि	Kriya-maaNaani	are performed	किये जाते हैं	केली जाणारी
गुणैः	GunaiH	by the qualities	गुणों द्वारा	गुणांनी
कर्माणि	KarmaaNi	actions	सम्पूर्ण कर्म	सर्व कर्मे
सर्वशः	SarvashaH	in all cases	सब प्रकार से	सर्व प्रकारांनी
अहङ्कार	Ahan-Kaar	egoism	अहङ्कार	अहंकार
विमूढात्मा	Vimudha-Aatmaa	one whose mind is deluded	(जिसका अन्तःकरण अहङ्कार से मोहित हो रहा है ऐसा) अज्ञानी पुरुष	(ज्याचे अन्तःकरण मोहित झाले आहे असा) अज्ञानी पुरुष
कर्ता	Kartaa	doer	कर्ता	कर्ता
अहम्	Aham	I	मैं	मी
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
मन्यते	Manyate	thinks	मानता है	मानतो

अन्वय :-

प्रकृतेः गुणैः कर्माणि सर्वशः क्रियमाणानि सन्ति , किन्तु अहङ्कार विमूढात्मा " अहम् कर्ता " इति मन्यते ॥ ३ – २७ ॥

English translation:-

Actions in all cases are performed by the Gunas (qualities) of Prakruti (nature). One who is deluded by egoism thinks, "I am the doer."

हिन्दी अनुवाद :-

सम्पूर्ण कर्म सब प्रकार से प्रकृति के (तीन) गुणों द्वारा किये जाते हैं , तो भी जिसका अन्तःकरण अहंकार से मोहित हो रहा है, ऐसा अज्ञानी पुरुष " मैं कर्ता हूँ " ऐसा मानता है ।

मराठी भाषान्तर :-

प्रकृतीच्या तीन प्रकारच्या गुणांनी सर्व प्रकारची कर्मे केली जातात , परंतु अहंकाराने अविवेकी आणि अविचारी झालेला पुरुष " मी कर्ता आहे " असे मानतो .

विनोबांची गीताई :-

कर्मे होतात हीं सारीं प्रकृतीच्या गुणांमुळें
अहंकार बळें मूढ कर्ता मी हें चि घेतसे ॥ ३ – २७ ॥

तत्त्ववित् तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणाः गुणेषु वर्तन्ते इति मत्वा न सज्जते ॥ ३ – २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्त्ववित्	Tattvavit	the knower of truth	तत्त्व को जाननेवाला ज्ञानयोगी	तत्त्व जाणणारा
तु	Tu	but	परंतु	परंतु
महाबाहो	Mahaabaah o	O mighty armed !	हे पराक्रमी अर्जुन !	हे पराक्रमी अर्जुना !
गुण-कर्म-विभागयोः	Gunakarma - Vibhaagayo H	of the divisions of qualities and functions	गुणविभाग और कर्मविभाग के	गुण व कर्म यांच्या विभागाप्रमाणे (ज्ञान जाणणारा)
गुणाः	GuNaaH	qualities (in the shape of senses)	सम्पूर्ण गुण ही	सर्वगुण (हेच)
गुणेषु	Guneshu	amidst the qualities (in the shape of objects)	गुणों में	गुणांमध्ये
वर्तन्ते	Vartante	remain	बरत रहे हैं	वावरतात
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
मत्वा	Matvaa	knowing	समझकर	जाणून
न	Na	not	नहीं	नाही
सज्जते	Sajjate	is attached	उन में आसक्त होता	गुंतत (आसक्त)

अन्वय :- हे महाबाहो ! गुणकर्मविभागयोः तत्त्ववित् तु " गुणाः गुणेषु वर्तन्ते " इति मत्वा न सज्जते ॥ ३ – २८ ॥

English translation:-

But he, O mighty-armed, with true insight into the distinctions of Gunas (qualities) and Karma (actions) knowing that Gunas (as senses) abide in Gunas (as objects), the true knowledgeable one is not attached.

हिन्दी अनुवाद :-

परंतु हे पराक्रमी अर्जुन ! गुणविभाग और कर्मविभाग के तत्त्व को जाननेवाला ज्ञानयोगी सम्पूर्ण गुण ही गुणों में बरत रहे हैं ऐसा समझकर उन में आसक्त नहीं होता ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी अर्जुना, गुण (सत्व, रज आणि तम) विभाग व कर्म (कर्मेन्द्रिये, ज्ञानेन्द्रिये , मन , बुद्धी आणि अहंकार) विभाग हे दोन्ही आपल्याहून भिन्न आहेत हे तत्त्व जाणणारा ज्ञानी पुरुष गुणांचा हा आपापसात खेळ चालला आहे असे समजून , त्यात आसक्त होत नाही .

विनोबांची गीताई :-

गुण हे आणि हीं कर्मे ह्यांहुनी वेगळा चि मी
ज्ञाणे तत्वज्ञ गुंते ना गुणांत गुण वागतां ॥ ३ – २८ ॥

प्रकृतेः गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।

तान् अकृत्स्नविदः मन्दान् कृत्स्नवित् न विचालयेत् ॥ ३ – २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रकृतेः	PrakruteH	of nature	प्रकृति के	प्रकृतीच्या
गुणसंमूढाः	Guna-Sam-MudhaaH	persons deluded by Gunas	गुणों से अत्यन्त मोहित हुए मनुष्य	गुणांनी अत्यंत मोहित झालेले पुरुष
सज्जन्ते	Sajjante	are attached	आसक्त रहते हैं	आसक्त होतात
गुणकर्मसु	Guna-karmasu	in the functions of the qualities	गुणों में और कर्मों में	गुणांमध्ये आणि कर्मांमध्ये
तान्	Taan	those	उन	त्या (पुरुषांना)
अकृत्स्नविदः	Akrutsna-VidaH	of imperfect knowledge	पूर्णतया न समझनेवाले	पूर्णपणे न जाणणाऱ्या
मन्दान्	Mandaan	the foolish	मन्दबुद्धि अज्ञानियों को	मन्दबुद्धी म्हणजेच अज्ञानी पुरुषांना
कृत्स्नवित्	Krutsnavit	man of perfect knowledge	पूर्णतया जाननेवाला ज्ञानी	संपूर्णपणे जाणणाऱ्या ज्ञानी पुरुषाने
न	Na	not	न / नही	नाही / नये
विचालयेत्	Vichaalayet	should unsettle	विचलित करे	विचलित करु

अन्वय :-

प्रकृतेः गुणसंमूढाः गुणकर्मसु सज्जन्ते , तान् अकृत्स्नविदः मन्दान् कृत्स्नवित् न विचालयेत् ॥ ३ – २९ ॥

English translation:-

Those deluded by the Gunas of Prakruti get attached to the functions of the Gunas. The man of perfect knowledge should not unsettle the mediocre one whose knowledge is imperfect.

हिन्दी अनुवाद :-

प्रकृति के गुणों से अत्यन्त मोहित हुए, मनुष्य गुणों में और कर्मों में आसक्त रहते हैं। उन पूर्णतया न समझनेवाले मन्दबुद्धि अज्ञानियों को, पूर्णतया जाननेवाला ज्ञानी विचलित न करे।

मराठी भाषान्तर :-

प्रकृतीच्या गुणांनी अत्यंत मोहित झालेले पुरुष, गुणांमध्ये आणि कर्मांमध्ये आसक्त होतात. त्या मन्दबुद्धीच्या अज्ञानी मूर्खांना, सर्वज्ञ पुरुषाने विचलित करु नये.

विनोबांची गीताई :-

गुंतले गुण कर्मी ज़े भुलले प्रकृती गुणें
त्या अल्प ज़ाणणारांस सर्वज्ञें चाळवूं नये ॥ ३ – २९ ॥

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्य अध्यात्मचेतसा ।

निराशीः निर्ममः भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ ३ – ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मयि	Mayi	in me	मुझ में	मला
सर्वाणि	SarvaaNi	all	सम्पूर्ण	सर्व
कर्माणि	KarmaaNi	actions	कर्मों को	कर्मे
संन्यस्य	Sannasya	renouncing	अर्पण कर	अर्पण करून
अध्यात्म - चेतसा	Adhyaatma-Chetasaa	with the mind centred on the self	मुझ अन्तर्यामी परमात्मा में लगे हुए चित्तद्वारा	अध्यात्म बुद्धीने
निराशीः	NiraasheeH	free from hope	आशारहित	आशारहित
निर्ममः	NirmamaH	free from ownership	ममतारहित	ममत्वरहित
भूत्वा	Bhootvaa	having become	होकर	होऊन
युध्यस्व	Yudhyasva	fight	तुम युद्ध करो	तू युद्ध कर
विगतज्वरः	VigatajvaraH	free from (mental) fever	संतापरहित	चिंतारहित

अन्वय :-

मयि अध्यात्मचेतसा सर्वाणि कर्माणि संन्यस्य, निराशीः, निर्ममः, विगतज्वरः भूत्वा; (त्वम्) युध्यस्व ॥ ३ – ३० ॥

English translation:-

Surrendering all actions to Me, with your thoughts resting on the Self, freed from hope and attachment and cured of mental fever, engage in battle.

हिन्दी अनुवाद :-

मुझ अन्तर्यामी परमात्मा में लगे हुए चित्तद्वारा सम्पूर्ण कर्मों को मुझ में अर्पण कर; आशारहित, ममतारहित और चिंतारहित होकर तुम युद्ध करो।

मराठी भाषान्तर :-

अध्यात्मबुद्धीने (मनात आत्मा व परमात्मा यांच्याबद्दल भक्ती ठेवून) सर्व कर्मे तू माझ्यामध्ये समर्पण कर. फलाशारहित, ममत्वरहित आणि चिंतारहित होऊन तू युद्ध कर.

विनोबांची गीताई :-

मज अध्यात्म वृत्तीनें सर्व कर्में समर्पुनी
फलाशा ममता सर्व सोडुनी झुंज तूं सुखें ॥ ३ – ३० ॥

ये मे मतम् इदम् नित्यम् अनुतिष्ठन्ति मानवाः ।

श्रद्धावन्तः अनसूयन्तः मुच्यन्ते ते अपि कर्मभिः ॥ ३ – ३१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	those who	जो कोई	जे
मे	Me	my	मेरे	माझ्या
मतम्	Matam	teaching	मत का	मताचे
इदम्	Idam	this	इस	या
नित्यम्	Nityam	constantly	सदा	नेहमी
अनुतिष्ठन्ति	Anu-tiShthanti	practise	अनुसरण करते हैं	अनुसरण करतात
मानवाः	MaanavaaH	men	मनुष्य	माणसे
श्रद्धावन्तः	Shraddhaa-vantaH	full of faith	श्रध्दायुक्त होकर	श्रद्धायुक्त होऊन
अनसूयन्तः	Ana-SooyantaH	not cavilling	दोषदृष्टि से रहित	दोषदृष्टिरहित
मुच्यन्ते	Muchyante	are freed	छूट जाते हैं	सुटका पावतात
ते	Te	they	वे	ते
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
कर्मभिः	KarmabhiH	from actions	सम्पूर्ण कर्मों से	सर्व कर्मांतून

अन्वय :-

ये मानवाः श्रद्धावन्तः , अनसूयन्तः इदम् मे मतम् नित्यम् अनुतिष्ठन्ति ; ते अपि कर्मभिः मुच्यन्ते ॥ ३ – ३१ ॥

English translation:-

Those who constantly practise this teaching of Mine, full of faith and free from cavilling, they too are liberated from actions.

हिन्दी अनुवाद :-

जो कोई मनुष्य दोषदृष्टि से रहित और श्रध्दायुक्त होकर मेरे इस मत का सदा अनुसरण करते हैं वे भी सम्पूर्ण कर्मों से छूट जाते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

जे श्रद्धावान लोक मत्सररहित होऊन माझ्या या मताप्रमाणे नेहमी आचरण करतात, ते सुद्धा सर्व कर्मांच्या दोषांपासून मुक्त होतात .

विनोबांची गीताई :-

माझें शासन हें नित्य जे निर्मत्सर पाळिती
श्रद्धेनें नेणते ते हि तोडिती कर्म बंधनें ॥ ३ – ३१ ॥

ये तु एतत् अभ्यसूयन्तः न अनुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढान् तान् विद्धि नष्टान् अचेतसः ॥ ३ - ३२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	those (who)	जो (मनुष्य)	जे (मानव)
तु	Tu	but	परंतु	परंतु
एतत्	Etat	this	इस	या
अभ्य-सूयन्तः	Abhya-suuyantaH	carping at (Me i.e. My teaching)	(मुझ में) दोषारोपण करते हुए	(माझ्यावर) दोषदृष्टी ठेवणारे
न	Na	not	नहीं	नाही
अनुतिष्ठन्ति	Anu-tiShthanti	practise	अनुसार चलते हैं	आचरण करतात
मे	Me	my	मेरे	माझ्या
मतम्	Matam	teaching	मत के	मताला
सर्वज्ञान-विमूढान्	Sarvadnyaan-VimuuDhaan	deluded in all knowledge	सम्पूर्ण ज्ञानों में मोहित	संपूर्ण ज्ञानाचे बाबतीत मोहित झालेले असे
तान्	Taan	them	उन	त्या
विद्धि	Viddhi	know	समझो	जाण / समज
नष्टान्	NaShtaan	ruined	नष्ट हुए ऐसे ही	नष्ट झालेले
अचेतसः	AchetasaH	devoid of discrimina-tion	मूर्खों को	मूर्खांना

अन्वय :-

ये तु एतत् अभ्यसूयन्तः मे मतम् न अनुतिष्ठन्ति , तान् सर्वज्ञानविमूढान् अचेतसः नष्टान् विद्धि ॥ ३ - ३२ ॥

English translation:-

But those who carp at My teaching and act not thereon, deluded in all knowledge and devoid of discrimination, know them to be ruined.

हिन्दी अनुवाद :-

परंतु जो मनुष्य मुझ में दोषारोपण करते हुए मेरे इस मत के अनुसार नहीं चलते हैं उन मूर्खों को तुम सम्पूर्ण ज्ञानोंमें मोहित और नष्ट हुए, ऐसे ही समझो ।

मराठी भाषान्तर :-

या उलट दोषदृष्टी ठेवणारे जे अविवेकी मूर्ख लोक माझ्या या मताप्रमाणे वागत नाहीत , ते सर्व प्रकारच्या ज्ञानाला मुकलेले असे मूर्ख लोक नाश पावतात हे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

परी मत्सर बुद्धीनें जे हें शासन मोडिती
ज्ञान - शून्य चि ते मूढ पावले नाश ज़ाण तूं ॥ ३ – ३२ ॥

सदृशम् चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः ज्ञानवान् अपि ।

प्रकृतिम् यान्ति भूतानि निग्रहः किम् करिष्यति ॥ ३ - ३३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सदृशम्	Sadrusham	in accordance	अनुसार	(अनुसरून) च्या प्रमाणे
चेष्टते	Cheshtate	acts	चेष्टा करता है	व्यवहार करतो
स्वस्याः	SvasyaaH	his own	अपनी	स्वतःच्या
प्रकृतेः	PrakruteH	of nature	प्रकृति के	स्वभाव प्रकृतीला अनुसरून
ज्ञानवान्	Dnyaanvaan	a wise man	ज्ञानवान्	ज्ञानी मनुष्य
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
प्रकृतिम्	Prakrutim	to nature	प्रकृति को	स्वभावावर
यान्ति	Yaanti	follow	प्राप्त होते हैं	जातात
भूतानि	Bhootaani	beings	सभी प्राणी	सर्वच प्राणी
निग्रहः	NigrahaH	restraint	हठ	हट्ट
किम्	Kim	what	क्या	काय
करिष्यति	Karishyati	will do	करेगा ?	करणार ?

अन्वय :-

ज्ञानवान् अपि स्वस्याः प्रकृतेः सदृशम् चेष्टते । भूतानि प्रकृतिम् यान्ति । निग्रहः किम् करिष्यति ? ॥ ३ - ३३ ॥

English translation:-

Even a wise man behaves in accordance with his own intrinsic nature; (so do all the) beings follow (their own) nature. What is the purpose of restraint in such cases?

हिन्दी अनुवाद :-

सभी प्राणी प्रकृति को प्राप्त होते हैं अर्थात् अपने स्वभाव के विवश हुए कर्म करते हैं। ज्ञानवान् भी अपनी प्रकृति के अनुसार चेष्टा करता है। फिर इसमें किसीका दमन (हठ) क्या करेगा ?

मराठी भाषान्तर :-

ज्ञानी पुरुषही स्वतःच्या स्वभावाला अनुसरून वागतो . सर्व प्राणी देखील आपापल्या प्रकृतीच्या वळणावर म्हणजेच स्वभावावर जातात . तेथे अट्टाहासाचा काय उपयोग ?

विनोबांची गीताई :-

ज्ञानी हि वागतो त्याच्या स्वभावास धरूनियां
स्वभाव - वश हीं भूतें बलात्कार निरर्थक ॥ ३ - ३३ ॥

इन्द्रियस्य इन्द्रियस्य अर्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।

तयोः न वशम् आगच्छेत् तौ हि अस्य परिपन्थिनौ ॥ ३ – ३४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इन्द्रियस्य इन्द्रियस्य	Indriyasya - Indriyasya	to the senses, of the senses	इन्द्रिय इन्द्रिय के	प्रत्येक इंद्रियाच्या
अर्थे	Arthe	in the object	अर्थ में	विषयामध्ये
रागद्वेषौ	Raaga-DveShau	attachment and aversion	राग और द्वेष	प्रेम आणि द्वेष
व्यवस्थितौ	Vyavasthitau	seated	(छिपे हुए) स्थित हैं	नियंत्रणाखाली असतात
तयोः	TayoH	of these two	उन दोनों के	त्या दोघांच्या
न	Na	not	नहीं	नाही
वशम्	Vasham	sway	वशमें	ताब्यात
आगच्छेत्	Aagachchhet	should come under	होना चाहिये	येतात
तौ	Tau	these two	वे दोनों ही	ते दोघेही
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
अस्य	Asya	his	इस के (कल्याणमार्ग में)	याचे (मोक्षमार्गातील)
परिपन्थिनौ	Pari-Panthinau	foes	विघ्न निर्माण करनेवाले महान् शत्रु (हैं)	वाटमारे (लुटारू / शत्रू)

अन्वय :-

इन्द्रियस्य अर्थे इन्द्रियस्य रागद्वेषौ व्यवस्थितौ , तयोः वशम् न आगच्छेत् । तौ हि अस्य परिपन्थिनौ ॥ ३ – ३४ ॥

English translation:-

Attachment and aversion of the senses for their respective objects are natural; let none come under the domination of these two tendencies as they are verily his enemies.

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रिय इन्द्रिय के अर्थ में अर्थात् प्रत्येक इन्द्रिय के विषय में राग और द्वेष छिपे हुए स्थित हैं। मनुष्य को उन दोनों के वश में नहीं होना चाहिये क्योंकि वे दोनों ही इसके कल्याणमार्ग में विघ्न निर्माण करनेवाले महान् शत्रु हैं।

मराठी भाषान्तर :-

प्रीती व द्वेष प्रत्येक इंद्रियाच्या विषयाच्या नियंत्रणाखाली असतात . त्यांच्या ताब्यात साधकाने जाऊ नये कारण ते त्याचे मोक्षमार्गातील लुटारु आहेत .

विनोबांची गीताई :-

इंद्रियीं सेवितां अर्थ राग द्वेष उभे तिथें
वश होऊं नये त्यांस ते मार्गांतील चोर चि ॥ ३ – ३४ ॥

श्रेयान् स्वधर्मः विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।

स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मः भयावहः ॥ ३ – ३५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रेयान्	Shreyaan	better	अति उत्तम (है)	उत्तम / अधिक कल्याणकारक
स्वधर्मः	SvadharmaH	one’s own duty	अपना धर्म	स्वतःचा धर्म (कर्तव्यकर्म)
विगुणः	VigunaH	devoid of merit	गुणरहित (भी)	गुणरहित
परधर्मात्	Paradharmaat	than the duty of another	दूसरे के धर्म से	दुसऱ्याच्या धर्मापेक्षा
स्वनुष्ठितात्	Su-anushthitaat	than well-discharged	अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए	चांगल्या प्रकारे आचरणात आणलेल्या
स्वधर्मे	Svadharme	in one’s own duty	अपने धर्म में तो	स्वधर्मात
निधनम्	Nidhanam	death	मरना भी	मरण
श्रेयः	ShreyaH	better	कल्याणकारक (है)	कल्याणकारक
परधर्मः	ParadharmaH	another’s duty	दूसरे का धर्म	दुसऱ्याचा धर्म
भयावहः	BhayaavahaH	fraught with fear	भय देनेवाला है	भय निर्माण करणारा

अन्वय :-

स्वनुष्ठितात् परधर्मात् विगुणः स्वधर्मः (अपि) श्रेयान् । स्वधर्मे निधनम् श्रेयः । परधर्मः भयावहः ॥ ३ – ३५ ॥

English translation:-

One's own duty (Dharma), though imperfect, is better than the duty (Dharma) of another well discharged. Death in one's own duty is better as another's duty is fraught with fear.

हिन्दी अनुवाद :-

अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय देनेवाला है।

मराठी भाषान्तर :-

उत्तम रीतीने आचरता येणाऱ्या परधर्मापेक्षा गुणरहित अशा स्वधर्माचे आचरण अधिक कल्याणकारक आहे. स्वधर्म आचरत असता मरणही अधिक कल्याणकारक आहे. परंतु परधर्म फारच भयंकर आहे.

विनोबांची गीताई :-

उणा हि आपुला धर्म पर धर्मांहुनी बरा
स्व - धर्मांत भला मृत्यु पर धर्म भयंकर ॥ ३ – ३५ ॥

अर्जुन उवाच ।

अथ केन प्रयुक्तः अयम् पापम् चरति पूरुषः ।

अनिच्छन् अपि वार्ष्णेय बलात् इव नियोजितः ॥ ३ – ३६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjun	Arjun	अर्जुन	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	ने कहा	म्हणाला
अथ	Atha	now	तो फिर	तर मग
केन	Kena	by which	किस से	कुणाकडून
प्रयुक्तः	PrayuktaH	impelled	प्रेरित होकर	प्रेरित होऊन
अयम्	Ayam	this	यह	हा
पापम्	Paapam	sin	पाप (का)	पाप
चरति	Charati	does	आचरण करता है	आचरण करतो
पूरुषः	PoorushaH	man	मनुष्य	पुरुष
अनिच्छन्	Anichchhan	not wishing	न चाहता हुआ	स्वतःची इच्छा नसताना
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
वार्ष्णेय	VaarShNeya	O Krishna!	हे वृष्णिकुलोत्पन्न कृष्ण !	हे वृष्णिकुलोत्पन्न कृष्णा !
बलात्	Balaat	by force	बलात्	बळजबरीने
इव	Iva	as it were	भाँति	जणू
नियोजितः	NiyojitaH	constrained	लगाये हुए की	भाग पाडल्यामुळे

अन्वय :-

अर्जुन उवाच – (हे) वार्ष्णेय ! अथ केन प्रयुक्तः अयम् पूरुषः अनिच्छन् अपि बलात् नियोजितः इव , पापम् चरति ॥ ३ – ३६ ॥

English translation:-

Arjuna said, “O Krishna! But dragged on by what does a man commit sin, unwillingly though, constrained as if it were by some force? ”

हिन्दी अनुवाद :-

हे कृष्ण ! तो फिर यह मनुष्य स्वयम् न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुए की भाँति किस से प्रेरित होकर पापका आचरण करता है ?

मराठी भाषान्तर :-

हे वृष्णि कुलोत्पन्न कृष्णा , तर मग कोणाच्या प्रेरणेने हा मनुष्य, इच्छा नसतानाही जबरदस्तीने करावयास लावल्याप्रमाणे, जणु पापाचे आचरण करतो ?

विनोबांची गीताई :-

मनुष्य करितो पाप कोणाच्या प्रेरणेमुळें
आपुली नसतां इच्छा वेठीस धरिला ज़सा ॥ ३ – ३६ ॥

श्री भगवान उवाच ।

कामः एषः क्रोधः एषः रजोगुणसमुद्भवः ।

महाशनः महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणम् ॥ ३ – ३७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान उवाच	Shree Bhagavaana Uvaacha	Shri Bhagavan said	श्री भगवान् ने कहा	श्री भगवान म्हणाले
कामः	KaamaH	desire	काम	काम
एषः	EshaH	this	यह	हा
क्रोधः	KrodhaH	anger	क्रोध	क्रोध
एषः	EshaH	this	यह	हा
रजोगुणसमुद्भवः	Rajo – Guna- Sam- Ud - BhavaH	Born of the Rajo-guna	रजोगुण से उत्पन्न हुआ	रजोगुणापासून उत्पन्न झालेला
महाशनः	Mahaa - shanaH	all devouring	बहुत खानेवाला	महाखादाड
महापाप्मा	Mhaa - Paapmaa	all sinful	बडा पापी	महापापी
विद्धि	Viddhi	know	तुम जानो	तू जाण
एनम्	Enam	this	इसको ही	याला
इह	Eha	here	इस विषय में	या (विषयात)
वैरिणम्	VairiNam	the foe	वैरी	शत्रू

अन्वय :-

श्री भगवान उवाच - रजोगुणसमुद्भवः महाशनः महापाप्मा एषः कामः , एषः क्रोधः (अस्ति ; त्वम्) एनम् इह वैरिणम् विद्धि ॥ ३ – ३७ ॥

English translation:-

It is desire, it is anger, born of the Rajo-guna; the most devouring, the most sinful, know this as the foe, here on the earth.

हिन्दी अनुवाद :-

रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है , यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगों से कभी न अघानेवाला और बडा पापी है , इसको ही तुम इस विषय में वैरी जानो ।

मराठी भाषान्तर :-

काम आणि क्रोध रजोगुणापासून उत्पन्न झालेले आहेत. हे महाखादाड म्हणजेच भोगांनी कधीही तृप्त न होणारे असून , मोठे पापी आहेत. या विश्वात काम (विषयेच्छा) व क्रोध हेच खरे शत्रू आहेत हे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

काम हा आणि हा क्रोध घडिला ज़ो रजोगुणें
मोठा खादाड पापिष्ठ तो वैरी ज़ाण तूं इथें ॥ ३ – ३७ ॥

धूमेन आव्रियते वह्निः यथा आदर्शः मलेन च ।

यथा उल्बेन आवृतः गर्भः तथा तेन इदम् आवृतम् ॥ ३ – ३८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
धूमेन	Dhumena	by smoke	धुएँ से	धुराने
आव्रियते	Aavriyate	is enveloped	ढका जाता है	झाकला जातो
वह्निः	VanhiH	fire	अग्नि	अग्नी
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार	ज्याप्रकारे
आदर्शः	AadarshaH	mirror	दर्पण	आरसा
मलेन	Malena	by dust	मैल से	धुळीने
च	Cha	and	और	आणि
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार	ज्याप्रकारे
उल्बेन	Ulbena	by the amnion	जेर से	वारेने
आवृतः	AavrutaH	enveloped	ढका रहता है	झाकलेला असतो
गर्भः	GarbhaH	embryo	गर्भ	गर्भ
तथा	Tathaa	so	वैसे ही	त्याप्रकारे
तेन	Tena	by it	उस (काम के द्वारा)	त्याने (त्या कामाच्या द्वारे)
इदम्	Idam	this	यह (ज्ञान)	हे (ज्ञान)
आवृतम्	Aavrutam	enveloped / covered	ढका रहता है	झाकलेले असते

अन्वय :-

यथा धूमेन वह्निः , यथा च मलेन आदर्शः आव्रियते , (यथा) उल्बेन गर्भः आवृतः , तथा तेन इदम् आवृतम् ॥ ३ – ३८ ॥

English translation:-

As fire is enveloped by smoke, as a mirror by dust, as an embryo is by the womb, similarly this knowledge is covered by that desire and anger.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस प्रकार धुएँ से अग्नि और मैल से दर्पण ढका रहता है तथा जिस प्रकार जेर से गर्भ ढका रहता है ; वैसे ही उस काम के द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याप्रमाणे धुराने अग्नी आणि धुळीने आरसा झाकलेला असतो , तसेच गर्भ जसा वारेने वेढलेला असतो ; त्याचप्रमाणे त्या कामक्रोधाने हे ज्ञान झाकून टाकलेले असते .

विनोबांची गीताई :-

धुरानें झांकिला अग्नि धुळीनें आरसा जसा
वारेनें वेष्टिला गर्भ कामानें ज्ञान हें तसें ॥ ३ – ३८ ॥

आवृतम् ज्ञानम् एतेन ज्ञानिनः नित्यवैरिणा ।

कामरुपेण कौन्तेय दुष्पूरेण अनलेन च ॥ ३ - ३९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आवृतम्	Aavrutam	enveloped / covered	ढका हुआ है	झाकून टाकलेले असते
ज्ञानम्	Dnyaanam	wisdom	(मनुष्य का) ज्ञान	ज्ञान
एतेन	Etena	by this	इस से	याने
ज्ञानिनः	DnyaaninaH	of the wise	ज्ञानियों के	ज्ञानी लोकांच्या
नित्यवैरिणा	Nitya - VairiNaa	by the constant enemy	नित्य वैरी के द्वारा	नित्य शत्रूने
कामरुपेण	Kaama - RupeNa	whose form is desire	कामरुप	काम रुपी
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
दुष्पूरेण	Dus - PureNa	insatiable	न पूर्ण होनेवाले	कधीही तृप्त न होणाऱ्या
अनलेन	Analena	by fire	अग्नि के समान	अग्नीप्रमाणे
च	Cha	and	और	आणि

अन्वय :-

(हे) कौन्तेय ! नित्यवैरिणा एतेन दुष्पूरेण कामरुपेण अनलेन च ज्ञानिनः ज्ञानम् आवृतम् ॥ ३ - ३९ ॥

English translation:-

O son of Kunti, knowledge is covered by this, the constant enemy of the wise in the form of desire, as insatiable fire.

हिन्दी अनुवाद :-

और हे अर्जुन ! इस अग्नि के समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरुप , ज्ञानियों के नित्य वैरी के द्वारा , मनुष्य का ज्ञान ढका हुआ है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! कधीही तृप्त न होणारा हा कामरुप अग्नी ज्ञानी माणसाचा कायमचा शत्रू आहे . या कामाने ज्ञानाला झाकून टाकलेले आहे .

विनोबांची गीताई :-

काम – रुप महा अग्नि नव्हे तृप्त कधीं चि जो
ज्ञाणत्याचा सदा वैरी त्यानें हें ज्ञान झांकिलें ॥ ३ – ३९ ॥

इंद्रियाणि मनः बुद्धिः अस्य अधिष्ठानम् उच्यते ।

एतैः विमोहयति एषः ज्ञानम् आवृत्य देहिनम् ॥ ३ – ४० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इंद्रियाणि	IndriyaaNi	the senses	इन्द्रियाँ	इंद्रिये
मनः	ManaH	the mind	मन	मन
बुद्धिः	BuddhiH	the intellect	और बुद्धि	बुद्धी
अस्य	Asya	its	इस के	याचे (कामाचे)
अधिष्ठानम्	AdhiShthaanam	seat	वासस्थान	निवासस्थान
उच्यते	Uchyate	is called	कहे जाते हैं	म्हटले जाते
एतैः	EtaiH	by these	इन (मन , बुद्धि और इन्द्रियों) के द्वारा (ही)	(या मन बुद्धी व इंद्रिये) यांच्या द्वारे
विमोहयति	Vi-Mohayati	deludes	मोहित करता है	मोहित करतो
एषः	EShaH	this	यह (काम)	हा (काम)
ज्ञानम्	Dnyaanam	wisdom	ज्ञान को	ज्ञानाला
आवृत्य	Aa-Vrutya	having enveloped / covered	आच्छादित कर	झाकून टाकून
देहिनम्	Dehinam	the embodied	जीवात्माको	जीवात्म्याला

अन्वय :-

इंद्रियाणि मनः बुद्धिः अस्य अधिष्ठानम् उच्यते । एषः एतैः ज्ञानम् आवृत्य देहिनम् विमोहयति ॥ ३ – ४० ॥

English translation:-

The senses, the mind and the intellect are said to be its seat; by these it deludes man by veiling his wisdom.

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रियाँ , मन और बुद्धि ये सब इस के निवासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन , बुद्धि और इन्द्रियों के द्वारा ही ज्ञानको आवरणित कर जीवात्मा को मोहित करता है।

मराठी भाषान्तर :-

इंद्रिये, मन आणि बुद्धी हे या कामाचे आश्रयस्थान आहे असे म्हटले जाते . हा काम या तीन गोष्टींच्या द्वारे ज्ञानाला आच्छादित करुन देहधारी जीवात्म्याला (नानाप्रकारे) मोहात पाडतो .

विनोबांची गीताई :-

घेऊनि आसऱ्यासाठीं इन्द्रियें मन बुद्धि तो
मोह पाडी मनुष्यातें त्याच्या ज्ञानास गुंडुनी ॥ ३ – ४० ॥

तस्मात् त्वम् इंद्रियाणि आदौ नियम्य भरतऋषभ ।

पाप्मानम् प्रजहि हि एनम् ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ३ – ४१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तस्मात्	Tsmat	therefore	इसलिये	म्हणून
त्वम्	Tvam	you	तुम	तू
इंद्रियाणि	Indriyaani	the senses	इन्द्रियों को	इंद्रियांना
आदौ	Aadau	in the beginning	पहले	प्रथम
नियम्य	Niyamya	having controlled	वश में कर	वश करून घेऊन
भरत - ऋषभ	Bharat - Rishabha	O best of the Bharatas !	हे भरत कुलोत्तम अर्जुन !	हे भरत कुलोत्तम अर्जुना !
पाप्मानम्	Paapmaanam	the sinful	महान् पापी काम को	महान पाप्याला (अशा कामाला)
प्रजहि	Prajahi	kill	बलपूर्वक मार डालो	बळपूर्वक मारून टाक
हि	Hi	surely	अवश्य ही	निश्चितपणे
एनम्	Enam	this	इस	या
ज्ञान	Dnyaana	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
विज्ञान	Vidnyaana	wisdom	विज्ञान	विज्ञान
नाशनम्	Naashanam	the destroyer	नाश करनेवाले	यांचा नाश करणाऱ्या

अन्वय :-

(हे) भरत - ऋषभ ! तस्मात् त्वम् आदौ इंद्रियाणि नियम्य , ज्ञान - विज्ञान नाशनम् एनम् पाप्मानम् हि प्रजहि ॥ ३ – ४१ ॥

English translation:-

Therefore, O eminent of the Bharatas, mastering first the senses, kill it – the sinful, the destroyer of knowledge and wisdom.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये हे अर्जुन ! तुम पहले इन्द्रियों को वश में कर ; इस ज्ञान और विज्ञान का नाश करनेवाले महान् पापी काम को अवश्य ही समाप्त करो ।

मराठी भाषान्तर :-

म्हणून हे भरतकुलोत्पन्न अर्जुना ! तू प्रथम इंद्रियांवर ताबा ठेवून , शास्त्रज्ञान व आत्मसाक्षात्काररुपी विज्ञान यांचा नाश करणाऱ्या , या पापी कामाला बळेच मारुन टाक .

विनोबांची गीताई :-

म्हणूनि पहिला थारा इंद्रियें तीं चि जिंकुनी
टाळीं पाप्यास ज्ञो नाशी ज्ञान विज्ञान सर्व हि ॥ ३ – ४१ ॥

इंद्रियाणि पराणि आहुः इन्द्रियेभ्यः परम् मनः ।

मनसः तु परा बुद्धिः यः बुद्धेः परतः तु सः ॥ ३ – ४२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इंद्रियाणि	IndriyaaNi	the senses	इन्द्रियों को स्थूल शरीर से	(स्थूलशरीरापेक्षा) इंद्रिये
पराणि	ParaaNi	superior	पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म	श्रेष्ठ (आहेत)
आहुः	AahuH	they say	कहते हैं	असे म्हणतात
इन्द्रियेभ्यः	IndriyebhyaH	than the senses	इन इन्द्रियों से	इंद्रियांपेक्षा
परम्	Param	superior	पर / श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
मनः	ManaH	the mind	मन (है)	मन
मनसः	ManasaH	than the mind	मन से	मनापेक्षा
तु	Tu	but	भी	तसेच
परा	Paraa	superior	पर / श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि (है)	बुद्धी
यः	YaH	who	जो	जो
बुद्धेः	BuddheH	than the intellect	बुद्धि से	बुद्धीपेक्षा
परतः	ParataH	greater	अत्यंत श्रेष्ठ	अत्यंत श्रेष्ठ
तु	Tu	but	भी	आणि
सः	SaH	he	वह (आत्मा है)	तो (आत्मा)

अन्वय :-

इंद्रियाणि पराणि आहुः , इन्द्रियेभ्यः मनः परम् , मनसः तु बुद्धिः परा , यः तु बुद्धेः परतः सः (आत्मा अस्ति) ॥ ३ - ४२ ॥

English translation:-

The senses are said to be superior to the body; the mind is superior to the senses; the intellect is superior to the mind; and what is superior to the intellect is Atman (an element of Brahman).

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रियों को स्थूल शरीर से श्रेष्ठ , बलवान् और सूक्ष्म कहा गया हैं । इन इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन है । मन से भी श्रेष्ठ बुद्धि है और जो बुद्धि से भी अत्यन्त श्रेष्ठ वह आत्मा है ।

मराठी भाषान्तर :-

शरीरापेक्षा इंद्रिये , इंद्रियांपेक्षा मन तसेच मनापेक्षा बुद्धी श्रेष्ठ आहे असे म्हणतात . जो बुद्धीपेक्षा अत्यंत श्रेष्ठ आहे तो आत्मा होय .

विनोबांची गीताई :-

इंद्रियें बोलिलीं थोर मन त्यांहूनि थोर तें
बुद्धि थोर मनाहूनि थोर तीहूनि तो प्रभु ॥ ३ - ४२ ॥

एवम् बुध्देः परम् बुद्-ध्वा संस्तभ्य आत्मानम् आत्मना ।

जहि शत्रुम् महाबाहो कामरूपम् दुरासदम् ॥ ३ – ४३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
बुध्देः	BuddheH	than the intellect	बुद्धि से	बुद्धीपेक्षा
परम्	Param	superior	पर अर्थात् सूक्ष्म बलवान् और श्रेष्ठ आत्मा को	श्रेष्ठ (अशा आत्म्याला)
बुद्-ध्वा	Buddhvaa	having known	जानकर और	जाणून
संस्तभ्य	Samstabhya	restraining	वश में कर	वश करून घेऊन
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	मन को	स्वतःच्या मनाला
आत्मना	Aatmanaa	by the Self	बुद्धि के द्वारा	शुद्ध अन्तःकरणाने (स्वतःच्या बुद्धीद्वारा)
जहि	Jahi	slay thou	तुम मार डालो	तू ठार कर
शत्रुम्	Shatrum	the enemy	शत्रुको	शत्रूला
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
कामरूपम्	Kaamarupam	of the form of desire	कामरुप	कामरूपी
दुरासदम्	Duraasadam	hard to conquer	दुर्जय	दुर्जय

अन्वय :-

(हे) महाबाहो ! एवम् (आत्मानम्) बुध्देः परम् बुद्-ध्वा , आत्मना आत्मानम् संस्तभ्य , कामरूपम् दुरासदम् शत्रुम् जहि ॥ ३ - ४३ ॥

English translation:-

O mighty armed, thus knowing Him (the Atman) as superior to the intellect, restraining the Self by the Self, kill the enemy in the form of desire which is difficult to conquer.

हिन्दी अनुवाद :-

इस प्रकार बुद्धि से सूक्ष्म , बलवान् और श्रेष्ठ आत्मा को जानकर और बुद्धि के द्वारा मनको वश में कर के , हे अर्जुन ! तुम इस कामरुप दुर्जय शत्रु को समाप्त कर डालो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी अर्जुना ! अशाप्रकारे बुद्धीपेक्षाही श्रेष्ठ आत्म्याचे स्वरुप जाणून , शुद्ध अन्तःकरणाने , त्यास्वरुपामध्ये स्थिर होऊन , जिंकण्यास कठीण अशा कामरुपी शत्रूचा नाश कर .

विनोबांची गीताई :-

असा तो प्रभु ज़ाणूनि आवरीं आप आपणा
संहारीं काम हा वैरी तूं गांठूनि परोपरी ॥ ३ – ४३ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम्

योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the third discourse designated as "the Yoga of Action".

तिसऱ्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

अगा कर्माहूनी अधिक बरवें ज्ञान म्हणसी ।

तरी का तू येथे मज करवि हिंसा करविसी ॥

वदे तेव्हां पार्थाप्रति यदुपती कर्म करणें ।

फलेच्छा सांडूनी , सहज मग ते ज्ञान म्हणणें ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलुनि कडेवरी ॥